RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-11 अंक:48 ता. 15 अगस्त 2022, सोमवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

संक्षिप्त समाचार

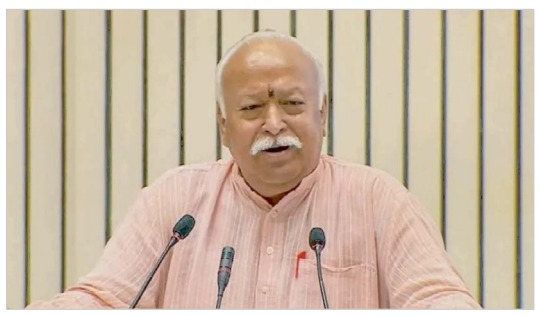

भारत के अस्तित्व में एकता, दुनिया को हमसे सीखना चाहिएः मोहन भागवत

नेशनल डेस्क। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार को कहा कि भारत जिस तरीके से विविधता को समेटे हुए है, उसके लिए दुनिया उसकी सराहना करती है। उन्होंने महाराष्ट्र के नागपुर शहर में 'भारत एट 2047 : **my vision my action** पर एक कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जब विविधता को प्रभावी तरीके से आत्मसात करने की बात आती है, तो दुनिया भारत की ओर देखती है। दुनिया विरोधाभासों से भरी हुई लेकिन द्वंद्व से निपटने का हुनर केवल भारत के पास है। भागवत ने कहा कि कई ऐतिहासिक घटनाएं रही हैं, जो हमें कभी नहीं बताई गईं और न ही उचित तरीके से कभी पढ़ाई गईं। भागवत ने कहा कि उदाहरण के लिए संस्कृत का व्याकरण जिस स्थान से उपजा, वह भारत में नहीं है। क्या हमने कभी सवाल पूछा कि क्यों?'' उन्होंने कहा कि यह मुख्य रूप से इसलिए हुआ क्योंकि सबसे पहले हम अपना विवेक और ज्ञान भूल गए और बाद में हमारी जमीन पर विदेशी आक्रमणकर्ताओं ने कब्जा कर लिया जो मुख्यतः उत्तर पश्चिम क्षेत्र से आए थे। हम अनावश्यक रूप से जाति और अन्य ऐसी ही व्यवस्थाओं को महत्व देते हैं।

आज मैंने भाई खो दिया, स्मृति ईरानी ने झुनझुनवाला को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली । केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने शेयर बाजार के दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उन्होंने अपना भाई खो दिया है। भारत के 'वॉरेन बफे' कहे जाने वाले झुनझुनवाला का रविवार सुबह दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वह 62 वर्ष के थे। ईरानी ने ट्वीट किया मैंने आज अपना भाई खो दिया एक ऐसा रिश्ता जो बहुत लोगों को नहीं पता था। वे उन्हें अरबपति निवेशक, बीएसई का बादशाह बुलाते थे, लेकिन वह हमेशा सपने देखने वाले व्यक्ति थे और रहेंगे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि दिग्गज निवेशक दृढ़, करुण, शिष्ट और मेरे बड़े भाई थे। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में कहा भैया हमेशा मुझे बोलते थे 'अपन अपने दम पर जियेंगे' और वह सचमुच अपनी शर्तों पर जिए राकेश झुनझुनवाला, महान शख्स, आपकी विरासत हमेशा रहेगी।

लाल किले की निगरानी में तैनात डीआरडीओ का 'बाज'

-परिंदा भी नहीं मार सकेंगा पर

नई दिल्ली । भारत इस बार 15 अगस्त को अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के उत्सवों की धूमधाम है स्वतंत्रता के इस समारोह के मुख्य आयोजन के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे। इस मौके पर करीब 7000 लोग लाल किले सामने बने दर्शक दीर्घा में उपस्थित रहेंगे। स्वतंत्रता दिवस समारोह के मद्देनजर लाल किले के प्रवेश द्वार पर बहुस्तरीय सुरक्षा घेरा बनाए जाने के अलावा चेहरे की पहचान प्रणाली वाले कैमरे लगाए गए हैं। डीआरडीओ द्वारा विकसित काउंटर-ड्रोन सिस्टम को किसी भी संभावित खतरे से निपटने के लिए लाल किला क्षेत्र के पास तैनात किया गया है। यह काउंटर-ड्रोन सिस्टम लगभग 4 किमी के दायरे में किसी भी आकार के ड्रोन का पता लगा सकता है और उन्हें निष्क्रिय कर सकता है। दिल्ली पुलिस के अनुसार, लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में लगभग 7000 मेहमान शिरकत करेंगे। सोमवार को स्मारक के आसपास 10,000 से अधिक पुलिस कर्मियों को तैनात किया जाएगा। दिल्ली पुलिस ने ड्रोन व यूएवी आदि से किसी संभावित खतरे का मुकाबला करने के लिए लाल किला क्षेत्र में छतों और अन्य संवेदनशील स्थानों पर 400 से अधिक पतंग या उड़ने वाली किसी भी वस्तु को पकड़ने वाले लोगों को तैनात किया है। तिरंगा फहराए जाने तक लाल किले के आसपास के 5 किलोमीटर का क्षेत्र 'नो फ्लाइंग जोन' के रूप में चिह्नित किया गया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि लाल किला परिसर में खाना, पानी की बोतलें, रिमोट से नियंत्रित कार की चाबियां, धूम्रपान का लाइटर, बक्से, हैंडबैग, कैमरा, दूरबीन, छाता और इसी तरह की वस्तुएं लेने जाने की अनुमति नहीं होगी।

मंकीपॉक्स वैक्सीन विकसित करने में 8 कंपनियों ने दिखाई अभिरुचि

नई दिल्ली । इन दिनों दुनिया में मंकीपॉक्स वायरस की दहशत व्याप्त है। भारत में भी इसके बचाव के लिए कार्य जारी है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) को मंकीपॉक्स वायरस के खिलाफ टीका और डायग्नोस्टिक किट विकसित करने में रुचि दिखाने वाले निमार्ताओं से 31 बोलियां प्राप्त हुई हैं। सूत्र के अनुसार, कुल 31 बोलियों में से आठ कंपनियों ने टीके के विकास के लिए ईओआई जमा किया है जबकि 23 फर्मों ने किट के विकास के प्रति रुचि दिखाई है। हालांकि, अभी तक किसी भी कंपनी को टेंडर नहीं दिया गया है और फिलहाल इसका मूल्यांकन किया जा रहा है। निर्माता सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से वैक्सीन विकसित करेंगे। आईसीएमआर ने पिछले महीने 27 जुलाई को मंकीपॉक्स के लिए वैक्सीन और डायग्नोस्टिक किट के विकास के लिए ईओआई को आमंत्रित किया था। मंकीपॉक्स के खिलाफ वैक्सीन उम्मीदवार के विकास में संयुक्त सहयोग के लिए अनुभवी वैक्सीन निर्माताओं, इन-ब्रिटो डायग्नोस्टिक (आईवीडी) किट निमार्ताओं से ईओआई को आमंत्रित किया गया था। ईओआई जमा करने की आखिरी तारीख 10 अगस्त थी।

देश के नाम संबोधन में बोलीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू,

हाल के वर्षों में दुनिया ने नए भारत को विकसित होते देखा

(एजेंसी)।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र को संबोधित किया। राष्ट्रपति के तौर पर राष्ट्र के नाम यह उनका पहला संबोधन है। अपने संबोधन में द्रौपदी मुर्मू ने 76वें स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर देश-विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि 14 अगस्त के दिन को विभाजन-विभीषिका स्मृति-दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस स्मृति दिवस को मनाने का उद्देश्य सामाजिक सद्भाव, मानव सशक्तीकरण और एकता को बढ़ावा देना है। हमारा संकल्प है कि वर्ष 2047 तक हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों को पूरी तरह साकार कर लेंगे।

दुनिया ने हाल के वर्षों में नए भारत को विकसित होते देखा

राष्ट्रपति ने कहा कि इस मिट्टी में न केवल लोकतंत्र की जड़ें बढ़ीं, बल्कि समृद्ध भी हुईं। हम भारतीयों ने संदेह जताने वाले लोगों को गलत साबित किया। लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता का पता लगाने में दुनिया की मदद करने का श्रेय भारत को दिया जा सकता है। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि दुनिया ने हाल के वर्षों में नए भारत को विकसित होते देखा है, विशेषकर कोविड-19 महामारी के प्रकोप के बाद। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भविष्य की पीढ़ी को औद्योगिक क्रांति के अगले चरण के लिए तैयार करना है, इसे विरासत से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि 15 अगस्त 1947 के दिन हमने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को काट दिया था। उस शुभ-दिवस की वर्षगांठ मनाते हुए हम लोग सभी स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन करते हैं। उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ताकि हम सब एक स्वाधीन भारत में सांस ले सकें। उन्होंने कहा कि अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लंबे समय तक

संघर्ष करना पड़ा था, लेकिन हमारे गणतंत्र की शुरुआत से ही भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया।

कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच लाल किले की प्राचीर से पीएम मोदी का संबोधन आज

नई दिल्ली । (एजेंसी)

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले के प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे। इसको लेकर लाल किले में और उसके आसपास एक बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। वहीं स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले आतंकी हमले की धमकी को देखते हुए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। अधिकारियों ने लाल किले में होने वाले कार्यक्रमों और सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। लाल किले की प्राचीर से पीएम नरेंद्र मोदी 15 अगस्त को तिरंगा फहराएंगे और देश को संबोधित करेंगे। इस दौरान दुनिया भर से कई वीआईपी, वीवीआईपी, एनसीसी कैडेट और अन्य विशेष आमंत्रित लोग, जनता के साथ इस कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे। वहीं सुरक्षा दस्ता वीवीआईपी काफिले के लिए मार्ग सुनिश्चित करेगा। शांतिपूर्ण आयोजन के लिए भीड़ को नियंत्रित करने के उपाय भी किए गए हैं। इसके अलावा कोरोना के बढ़ते मामलों के मद्देनजर कोविड-19 प्रोटोकॉल को भी लागू किया जाएगा। साथ ही लाल किले के चारों ओर पांच किलोमीटर के दायरे में हवाई क्षेत्र को भी चिह्नित किया गया है। स्वतंत्रता दिवस समारोह के मद्देनजर लालकिले के प्रवेश द्वार पर चेहरे की पहचान प्रणाली (एफआरएस) वाले कैमरे लगाए गए हैं। पुलिस के अनुसार, लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में लगभग सात हज़ार मेहमान शिरकत करेंगे। वहीं लाल किले के आसपास 10,000 से अधिक पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया है।

वहीं दिल्ली पुलिस ने ड्रोन और यूएवी आदि से किसी संभावित खतरे का मुकाबला करने के लिए लाल किला क्षेत्र में छतों और अन्य संवेदनशील स्थानों पर 400 से अधिक पतंग या उड़ने वाली किसी भी वस्तु को पकड़ने वाले लोगों को तैनात किया है। तिरंगा फहराए जाने तक लाल किले के आसपास के पांच किलोमीटर के क्षेत्र को नो काइट फ्लाइंग जोन के रूप में चिह्नित किया गया है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने 'ड्रोन रोधी प्रणाली' भी लगाई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक, लाल किले पर और उसके आसपास उच्च विशिष्टता वाले सुरक्षा कैमरे लगाए हैं और उनके फुटेज की 24 घंटे निगरानी की जाएगी। इस बार, आमंत्रित मेहमानों की संख्या बढ़कर सात हज़ार तक पहुंच गई है। हमने लाल किले के प्रवेश द्वार पर भी एफआरएस कैमरे तैनात किए हैं। 15 अगस्त को लाल किला परिसर में खाना, पानी की बोतलें, रिमोट से नियंत्रित कार की चाबियां, धूम्रपान का लाइटर, बक्से, हैंडबैग, कैमरा, दूरबीन, छाता और इसी तरह की वस्तुओं की अनुमति नहीं होगी। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, दिल्ली में धारा-144 के प्रावधान पहले ही लागू कर दिए गए हैं।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर उपराष्ट्रपति बोले,

हम पिछले 75 वर्षों में हुई अपार प्रगति का जश्न मना रहे

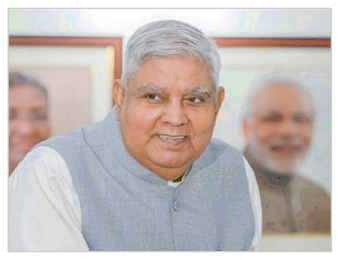

(एजेंसी)।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने रविवार को कहा कि स्वतंत्रता दिवस स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने का एक अवसर है, जिनके साहस और बलिदान ने हमें एक दमनकारी औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलायी।'' उन्होंने कहा कि आज, आधुनिक भारत के उन निर्माताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने का भी दिन है जिनकी मेहनत और संकल्प ने एक संप्रभु, स्थायी और सुदृढ़ गणतंत्र की नींव डाली। उन्होंने कहा कि आज, भारत संभावनाओं और सामर्थ्य से परिपूर्ण देश है जो सर्वांगीण विकास के पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। उपराष्ट्रपति ने 76वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर अपने संदेश में कहा कि हम पिछले 75 वर्षों में हुई अपार प्रगति का जश्न मना रहे हैं, ''हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमने स्वतंत्रता कितनी मुश्किल से हासिल की है।'' उन्होंने कहा, ''आज जब हम विगत पचहत्तर वर्षों में देश की उपलब्धियों का उत्सव मना रहे हैं, हम यह भी याद रखें कि यह आज़ादी कितने कठिन संघर्ष के बाद हासिल की गई। स्वतंत्रता दिवस हमें उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करने तथा उन्हें श्रद्धांजलि देने का भी अवसर है, जिनके साहस और बलिदान ने हमें एक दमनकारी औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलायी।'' उन्होंने कहा कि आज, आधुनिक भारत के उन निर्माताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने का भी दिन है जिनकी मेहनत और संकल्प ने एक संप्रभु, स्थायी और सुदृढ़ गणतंत्र की नींव डाली। उन्होंने कहा कि आज, भारत संभावनाओं और सामर्थ्य से परिपूर्ण देश है जो सर्वांगीण विकास के पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

अमित शाह ने विभाजन को 'अमानवीय' अध्याय करार दिया

नई दिल्ली । देश में आजादी की 75वीं वर्षगांठ के उत्सव मनाया जा रहा है ऐसे में विभाजन की घटना को याद कर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को उसमें दान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि भारत के इतिहास के इस 'अमानवीय' अध्याय को कभी नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने कहा कि 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' युवा पीढ़ी को देशवासियों की पीड़ा की याद दिलाएगा और नागरिकों को 'हमेशा के लिए' शांति व सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रेरित करेगा। शाह ने ट्वीट किया, '1947 में हुआ देश का विभाजन भारतीय इतिहास का वो अमानवीय अध्याय है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। विभाजन की हिंसा और घृणा ने लाखों लोगों की जान ले ली व असंख्य लोगों को विस्थापित होना पड़ा। आज 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' पर बंटवारे का दंश झेलने वाले लाखों लोगों को नमन करता हूं।' उन्होंने लिखा, 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस देश की युवा पीढ़ी को विभाजन के दौरान लोगों द्वारा सही गई यातना एवं वेदना का स्मरण कराएगा और देशवासियों को देश में सदा शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रेरित भी करेगा।' वर्ष 1947 में भारत के विभाजन के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगों में लाखों लोग विस्थापित हुए थे और बड़ी संख्या में लोग मारे गए थे। भारत सोमवार को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाएगा। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन के दौरान जान गंवाने वाले सभी लोगों को रविवार को श्रद्धांजलि दी और इतिहास के उस दुखद काल के पीड़ितों के धैर्य और सहनशीलता की सराहना की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल घोषणा की थी कि 14 अगस्त को लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के तौर पर मनाया जाएगा। मोदी ने ट्वीट किया, 'आज विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर, मैं विभाजन के दौरान जान गंवाने वाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि देता हूं और हमारे इतिहास के उस दुखद काल के पीड़ितों के धैर्य और सहनशीलता की सराहना करता हूं।'

देश की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता, जो भी हमारी शांति में खलल डालेगा उसे जवाब दिया जाएगा : राजनाथ

जोधपुर । रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि भारत ने चीन को अपने क्षेत्र में प्रवेश नहीं करने दिया है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक दलों को देश की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों का राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा जो भी कहा जाए, भारत ने अपनी जमीन पर किसी को भी अतिक्रमण नहीं करने दिया। केंद्र सरकार ने भारत के लोगों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है और जो भी देश की शांति एवं सद्भाव को बिगाड़ने की कोशिश करेगा, उसे जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा, इस मामले में कई घटनाएं हुईं, जिन्हें हम केवल दो-तीन लोग ही जानते हैं। राजनाथ सिंह ने कहा कि उन विवरणों का खुलासा नहीं कर सकता लेकिन हमने उन्हें अपने क्षेत्र में घुसपैठ नहीं करने दी। राजनाथ सिंह ने राजनीतिक दलों से मुद्दों का राजनीतिकरण न करने की अपील की। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सशस्त्र बलों को नवीनतम हथियारों और प्रौद्योगिकी से लैस किया जा रहा है तथा वे भविष्य के सभी खतरों से निपटने के लिए तैयार हैं। उन्होंने रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि उनके मंत्रालय ने स्वदेशी हथियारों के निर्माण के लिए कई सुधार किए हैं। राजनाथ सिंह ने कहा पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा किए गए उपायों के कारण, भारत दुनिया के शीर्ष 25 रक्षा निर्यातकों में जगह पाने के लिए छलांग लगा चुका है। इस दशक के अंत तक, भारत न केवल अपने लिए रक्षा उपकरण बनाएगा, बल्कि मित्र देशों की जरूरतों को भी पूरा करेगा। सिंह मुगल काल के राजपूत सेनापति वीर दुर्गादास राठौर की प्रतिमा के अनावरण समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा जो कहती है वह करती है। राजपूत सेनापति की 385वीं जयंती पर जोधपुर के सलवां कलां गांव में राठौर की प्रतिमा का अनावरण करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा, कहा जाता है कि राजनीतिक नेताओं की कथनी और करनी में अंतर होता है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, लेकिन भाजपा जो कहती है वह करती है।

राकेश झुनझुनवाला के निधन पर बिजनेसमैन से लेकर नेताओं ने जताया दुख

(एजेंसी):

दिग्गज शेयर निवेशक और अरबपति व्यवसायी राकेश झुनझुनवाला का 62 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है। उन्होंने मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। अस्पताल के मुताबिक, राकेश पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे। झुनझुनवाला के निधन की खबर से पूरी दुनिया स्तब्ध है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल समेत तमाम लोगों ने उनके निधन पर दुख व्यक्त किया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जताया दुख

पीएम मोदी ने उनके निधन पर दुख व्यक्त करते हुए लिखा- राकेश झुनझुनवाला अदम्य थे। वह जीवन से भरपूर थे, मजाकिया और व्यावहारिक थे। राकेश अपने पीछे वित्तीय दुनिया में एक अमिट योगदान छोड़ गए हैं। वह भारत की प्रगति को लेकर हमेशा बात करते थे। उनका जाना दुखद है। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं। ओम शांति।

गृह मंत्री अमित शाह ने जताया दुख

वहीं, गृह मंत्री अमित शाह ने शोक जताते हुए लिखा- राकेश झुनझुनवाला जी के निधन के बारे में जानकर दुख हुआ। उनके अनुभव और शेयर बाजार की समझ ने अनगिनत निवेशकों को प्रेरित किया है। उन्हें उनके बुलंद दृष्टिकोण के लिए हमेशा याद किया जाएगा। उनके परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। ओम शांति शांति।

पीयूष गोयल ने शोक जताया

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने लिखा- दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला के निधन पर गहरा दुख हुआ। वह करोड़ों की संपत्ति बनाने के प्रेरणास्रोत थे। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं। ओम शांति।

जेपी नड्डा ने जताया दुख

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने दुख व्यक्त करते हुए लिखा- दिग्गज निवेशक, उद्योगपति और शेयर व्यापारी श्री राकेश झुनझुनवाला के आज सुबह निधन की झकझोर देने वाली खबर से मैं दुखी हूं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और प्रभु राम उनके परिवारजनों एवं प्रियजनों को शक्ति प्रदान करें। ओम शांति।

राजनाथ सिंह ने जताया दुख

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लिखा- अनुभवी निवेशक श्री राकेश झुनझुनवाला के आकस्मिक निधन से स्तब्ध हूं। उन्हें व्यापार और उद्योग में उनके योगदान के लिए याद किया जाएगा। वह भारतीय शेयर बाजारों में निवेश की संस्कृति बनाने में सबसे आगे थे। उनके परिवार और कई प्रशंसकों के प्रति संवेदनाएं।

वित्तीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने दुख व्यक्त करते हुए लिखा-

राकेश झुनझुनवाला नहीं रहे। निवेशक, साहसिक जोखिम लेने वाला, शेयर बाजार की उत्कृष्ट समझ, संचार में स्पष्ट- अपने आप में एक लीडर। हमारे बीच हुई कई बातचीत को याद कर रही हूं। भारत की ताकत और क्षमताओं में दृढ़ विश्वास था।

हाल ही में एविएशन सेक्टर में ली थी एंट्री

कई तरह के व्यापारों में निवेश करने वाले राकेश झुनझुनवाला ने हाल ही में अकासा एयरलाइंस पर भी निवेश किया था। इसमें 40 प्रतिशत हिस्सेदारी झुनझुनवाला के पास थी। यह निवेश ऐसे समय में किया गया था, जब ज्यादातर विमानन कंपनियां घाटे में चल रहीं हैं। अकासा एयरलाइंस ने अपनी उड़ानों के लिए अमेरिकी एयरोस्पेस कंपनी 72 बोइंस 737 मैक्स विमानों की खरीद की थी।

वीरेंद्र सहवाग ने व्यक्त की संवेदना

भारत के पूर्व क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने भी राकेश झुनझुनवाला के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने ट्वीट किया, %दलाल स्ट्रीट के बिग बुल के रूप में एक युग का अंत, राकेश झुनझुनवाला का निधन। उनके परिवार और प्रियजनों के प्रति संवेदना। ओम शांति'

'देश के बारे में आशावादी'

सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने ट्वीट किया, 'अपनी बजट एयरलाइन, अकासा एयरलाइन शुरू करने के कुछ ही दिनों बाद, राकेश झुनझुनवाला के निधन के बारे में सुनकर दुख हुआ। वह न केवल शेयर बाजार के जानकार ही नहीं थे बल्कि देश के बारे में भी आशावादी थे। उनके परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना।'

भाजपा नेताओं ने हाथ में तिरंगा लेकर विभाजन के वक्त अपनी जान गंवाने वाले वीर जवानों को याद किया

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा के नेतृत्व में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर दिल्ली भाजपा ने निकाली मौन तिरंगा यात्रा

मौन तिरंगा यात्रा में केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और अनुराग ठाकुर, प्रदेश प्रभारी बैजयंत जय पांडा, प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता सहित कई गणमान्य शामिल हुए

नई दिल्ली ।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के नेतृत्व में आज विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर प्रदेश के जंतर-मंतर से कनॉट प्लेस तक मौन तिरंगा यात्रा निकाली गई जिसमें केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल एवं अनुराग ठाकुर, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रदेश प्रभारी बैजयंत जय पांडा, प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता, नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी, पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू सहित प्रदेश महामंत्री कुलजीत सिंह चहल एवं दिनेश प्रताप सिंह, कार्यक्रम के संयोजक एवं प्रदेश उपाध्यक्ष राजन तिवारी, सहित प्रदेश, मोर्चा, जिला एवं मंडल के पदाधिकारी एवं हज़ारों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता शामिल हुए। मौन तिरंगा यात्रा में शामिल हुए सभी गणमान्यों ने तिरंगा हाथ में लेकर उन सभी वीर जवानों को सच्ची श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने विभाजन के वक्त अपनी जान गंवाई। इसके साथ ही भाजपा नेताओं ने मौन तिरंगा यात्रा के माध्यम से उन लोगों को भी याद किया जिन्होंने विभाजन के वक्त नफरत और हिंसा के खेल के कारण पलायन होने को मजबूर हुए और कईयों ने इसमें अपनी जानें भी गंवाई। 14 अगस्त 1947 वो दिन है जब भारत की सदियों पुरानी संस्कृति को चंद लोगों ने काग़ज़ पर लकीरें खींच कर बाँट दिया और इस त्रासदी ने देश की आत्मा को रक्तरंजित कर दिया। इस तरह की विभीषिकाओं को याद रखने और उससे सीख लेने के लिए पिछले साल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का ऐलान किया था और तब से इस दिवस को मनाया जा रहा है।

विभाजन विभीषिका स्मृतिका दिवस पर निकाला मौन जुलूस

रिपोर्ट आकाश मिश्रा
सूरत भूमि जौनपुर ।

भारत पाक बंटवारे के विरोध स्वरूप 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृतिका दिवस के रूप में मनाते हुए भारतीय जनता पार्टी द्वारा देशभर में मौन जुलुस निकालकर विरोध किया जा रहा है ,पार्टी संगठन के निर्देश पर रविवार को सिकरारा भाजपा मंडल द्वारा हाथों में तिरंगा व कैंडिल लेकर मौन जुलूस निकाला गया।भाजपा जिलाउपाध्यक्ष पूर्व प्रमुख सुधाकर उपाध्याय की देखरेख में मण्डल अध्यक्ष अजय मिश्र के नेतृत्व में सैकड़ो की तादात में पदाधिकारी व कार्यकर्ता व क्षेत्रीय जनों के साथ सिकरारा पुरानी बाजार स्थित अमर सेनानी पंडित सूर्यनाथ उपाध्याय स्मृतिद्वार से आरम्भ होकर सिकरारा चौराहा होते हुए सिकरारा थाने के समीप पहुँचकर सम्पन्न हुई।मौन जुलूस में ब्लाक प्रमुख संजय सिंह,उनके बड़े भाई धीरू सिंह,जिला लघुसहसंयोजक डॉ देवी प्रसाद सिंह,जिला उपाध्यक्ष संदीप सरोज,मण्डल उपाध्यक्ष अरविंद सिंह,पवन मिश्रा,आकाश मिश्रा,सहित तमाम कार्यकर्ता सक्रिय रहे,मौन जुलूस की निगरानी में बीडीओ अस्मिता सेन,सुरक्षा व्यवस्था में थानाध्यक्ष विवेक कुमार तिवारी मयफोर्स सक्रिय रहे।

नीतीश कुमार, तेजस्वी यादव या फिर भाजपा किस करवट बैठेगी बिहार की राजनीति

नई दिल्ली ।

बिहार ने 2024 के लोकसभा चुनावों से ठीक दो साल पहले एकबार फिर सत्ता परिवर्तन देखा है। बिहार के बारे में आमतौर पर कहा जाता है कि अगर राज्य की तीन मुख्य पार्टियों (राजद, भाजपा और जदयू) में से दो एक साथ आ जाएं, तो वह गठबंधन सरकार बनाने में सक्षम है। हालांकि, बिहार में नए राजनीतिक गठबंधन ने हर राजनीतिक दल को फिर से अपनी रणनीति का मूल्यांकन करने के लिए मजबूर कर दिया है। तीनों पार्टियों और उनके नेताओं के लिए नई चुनौतियां सामने हैं। राजद और उसके नेता तेजस्वी यादव नए गठबंधन में स्पष्ट विजेता हैं। उनकी पार्टी जदयू के साथ सत्ता में वापस आ चुकी है। आरजेडी बिहार विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी है। तेजस्वी यादव ने चुनाव अभियान के दौरान बेरोजगारी को एक प्रमुख मुद्दा बनाया था। चुनाव के बाद उन्होंने खुद को युवा कल्याण के चैंपियन के रूप में पेश किया। बिहार की राजनीति में इस बात के भी कयास लग रहे हैं कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तेजस्वी यादव को अपनी विरासत सौंप सकते हैं। राजद उच्च जातियों के एक वर्ग के बीच अपने सामाजिक आधार का विस्तार करने पर काम कर रही थी। बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि नई सरकार नौकरियों के अपने वादे को कैसे लागू करती है। अधिकांश पिछड़ी जातियों (एमबीसी) के मतदाताओं का पोषण नीतीश कुमार ने किया है। उन्होंने हमेशा उनका समर्थन किया है। तेजस्वी यादव पर यह जिम्मेदारी है कि नीतीश कुमार के समर्थक खुद को हाशिए पर न पाएं, क्योंकि उनका नेता चुनावी संख्या के मामले में कमजोर है। नीतीश कुमार और उनके मतदाताओं के हाशिए पर जाने के कारण ही जेडीयू नेता ने ऐसा कदम उठाया जिसकी भाजपा को उम्मीद नहीं थी। नीतीश कुमार के साथ बीजेपी पिलर राइडर हुआ करती थी, लेकिन 2019 और 2020 में चीजें बदल गईं। बीजेपी बिहार में बड़े पार्टनर के रूप में उभरी है। हालांकि चुनावी रूप से सबसे बड़ी राष्ट्रीय पार्टी के रूप में भाजपा का उदय उसके सहयोगियों को डरा रहा है। बिहार में पार्टी को नया समीकरण बनाना होगा और वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निर्भर रहेगी। लाभार्थी (कल्याणकारी योजना के लाभार्थी) राजनीति भाजपा के लिए आजमाया हुआ औजार है। पार्टी के नेता पहले से ही पीएम मोदी को गरीबों के लिए काम करने वाले नेता के रूप में पेश कर रहे हैं। पारंपरिक उच्च जाति के मतदाताओं के अलावा भाजपा उस राज्य में लाभार्थी मतदाताओं को पकड़ने के लिए काम करेगी, जहां जाति मायने रखती है।

रेलवे 75 वर्ष से अधिक उम्र वाले सेवानिवृत्त कर्मियों के लिए जारी करेगा 'आजादी पास'

मुरादाबाद ।

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर रेलवे अपने 75 साल के अधिक उम्र वाले सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए आजादी पास जारी करेगा। यह पास सेवाकाल में बेहतर कार्य करने वाले उन सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों को दिए जाएंगे, जिनकी उम्र 75 वर्ष से अधिक हो गई है। एक पास पर एसी द्वितीय श्रेणी में दो यात्रियों के सफर की सुविधा मिलेगी। उल्लेखनीय है कि कोरोना संक्रमण के बाद रेलवे ने निशुल्क या रियायती दर पर सफर करने वाले अधिकांश पास बंद कर दिए हैं। रेलवे की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण ये पास फिर से शुरू नहीं किए जाएंगे। रेल प्रशासन द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव को लेकर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में स्वतंत्रता दिवस पर रेलवे प्रशासन ने आजादी पास जारी करने की घोषणा की है। इसके साथ ही 75 वर्ष की उम्र के हो चुके सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारी जिसने सेवाकाल में बेहतर प्रदर्शन किया है, उसे यह पास देकर सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान मंडल रेल प्रबंधक से लेकर रेलवे मंत्री तक किया जाना है। रेलवे बोर्ड चेयरमैन द्वारा सम्मानित होने वाले मुरादाबाद रेल मंडल के कई सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारी का भी नाम शामिल है। रेलवे बोर्ड के उप निदेशक (हित) वी मुरलीधरन ने 11 अगस्त को पत्र जारी किया है। सम्मानित होने वाले कर्मचारियों को आजादी पास दिया जाएगा। जिसकी मान्यता 15 दिन होगी। आजादी पास से एसी टू में सेवानिवृत्त कर्मचारी के साथ एक सहयोगी सफर कर सकेगा। साल में एक बार या विशेष आयोजन पर बुलाए जाने पर यह पास उपलब्ध कराया जाएगा। आजादी पास से किसी भी ट्रेन में सफर करने की सुविधा उपलब्ध होगी। रेलवे के कार्यक्रम में जाने वाले सेवानिवृत्त अधिकारियों व कर्मचारियों के ठहरने व खाने की व्यवस्था भी होगी। सेवानिवृत्त अधिकारियों को साल में तीन और कर्मचारियों को दो पास एसी श्रेणी में सफर करने को मिलते हैं।

संक्षिप्त समाचार

लगातार नौंवी बार स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करेंगे पीएम मोदी

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार नौवीं बार लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे और देश को संबोधित करेंगे। इस साल 15 अगस्त को होने वाला समारोह खास है, क्योंकि यह भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर हो रहा है। सरकार ने इस मौके पर कई कार्यक्रम शुरू किए है। सरकार ने आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर 'हर घर तिरंगा' समेत कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। पीएम मोदी अक्सर इस अवसर पर अपनी सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के अहम नतीजों पर बात करते हैं और कई बार महत्वपूर्ण घोषणाएं करते हैं। उन्होंने पिछले साल अपने भाषण में राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन, गति शक्ति मास्टर प्लान और 75 सप्ताह में 75 वंदे भारत ट्रेन चलाने की घोषणाएं की थीं। इससे पहले 2020 में प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की थी कि छह लाख से अधिक गांवों को ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से जोड़ने का काम 1,000 दिन में पूरा किया जाएगा। उन्होंने प्रत्येक नागरिक को डिजिटल स्वास्थ्य पहचान पत्र देने की सरकार की योजना का भी जिक्र किया था। उन्होंने 2019 में स्वतंत्रता दिवस के अपने भाषण में प्रमुख रक्षा अध्यक्ष का पद बनाने की अहम घोषणा की थी।

कांग्रेस बोली- 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' मनाने के पीछे राजनीतिक लाभ की अपेक्षा

नई दिल्ली । कांग्रेस ने 14 अगस्त के दिन 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' मनाने को लेकर केंद्र सी मोदी सरकार पर निशाना साधा और उसके पीछे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वास्तविक मंशा को उजागर किया और कहा कि सबसे दुखद ऐतिहासिक घटनाओं को अपने राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने की है। प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले साल घोषणा की थी कि लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में 14 अगस्त के दिन विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाया जाएगा। कांग्रेस महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने कहा कि विभाजन की त्रासदी का इस्तेमाल नफरत और पूर्वाग्रह की भावना को भड़काने के लिए नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि नफरत की राजनीति हारेगी और कांग्रेस गांधी, नेहरू, पटेल तथा अन्य नेताओं की विरासत को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्र को एकजुट करने का प्रयास जारी रखेगी। जयराम रमेश ने ट्वीट किया, '14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने के पीछे प्रधानमंत्री की वास्तविक मंशा सबसे दुखद ऐतिहासिक घटनाओं को अपने राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने की है। लाखों लोग विस्थापित हुए और जानें गईं। उनके बलिदानों को भुलाया या निरादर नहीं किया जाना चाहिए।' उन्होंने लिखा, 'बंटवारे की त्रासदी का दुरुपयोग नफरत और पूर्वाग्रह की भावना को भड़काने के लिए नहीं होना चाहिए। सच यह है कि सावरकर ने द्विराष्ट्र का सिद्धांत दिया और जिन्ना ने इसे आगे बढ़ाया। पटेल ने लिखा था कि मुझे लगता है कि अगर विभाजन स्वीकार नहीं किया गया, तो भारत कई टुकड़ों में बंट जाएगा।' कांग्रेस नेता ने पूछा, 'क्या प्रधानमंत्री आज जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी को भी याद करेंगे, जिन्होंने शरत चंद्र बोस की इच्छा के खिलाफ बंगाल के विभाजन का समर्थन किया था और वह तब स्वतंत्र भारत की पहली कैबिनेट में शामिल हुए थे, जब विभाजन के दर्दनाक परिणाम स्पष्ट रूप से सामने आ रहे थे।' रमेश ने ट्वीट किया, 'देश को बांटने के लिए आधुनिक दौर के सावरकर और जिन्ना का प्रयास आज भी जारी है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस गांधी, नेहरू, पटेल और अन्य नेताओं की विरासत को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्र को एकजुट करने का प्रयास जारी रखेगी। नफरत की राजनीति हारेगी।' बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट करके विभाजन के दौरान जान गंवाने वाले लोगों को रविवार को श्रद्धांजलि दी और इतिहास के उस दुखद काल के पीड़ितों के धैर्य और सहनशक्ति की सराहना की। गौरतलब है कि 1947 में भारत के विभाजन के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगों में लाखों लोग विस्थापित हुए थे और बड़ी संख्या में लोग मारे गए थे।

भक्त चरण दास का दावा नीतीश सरकार में कांग्रेस को मिलेंगे 3 मंत्री पद

भक्त चरण दास ने यह भी कहा कि अगले कैबिनेट विस्तार में कांग्रेस का एक और विधायक शामिल किया जाएगा

पटना

बिहार में कांग्रेस के राज्य प्रभारी भक्त चरण दास ने दावा किया है कि नीतीश कुमार की नई सरकार में कांग्रेस को तीन मंत्री पद मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के दो विधायक 16 अगस्त को मंत्री पद की शपथ लेंगे। भक्त चरण दास ने यह भी कहा कि अगले कैबिनेट विस्तार में कांग्रेस का एक और विधायक शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा, बिहार में गठबंधन की सरकार में कांग्रेस को मिलने वाले मंत्री पद तय हो गए हैं। दास ने कहा कि कांग्रेस की ओर से कौन विधायक मंत्री बनेगा, अभी इस बारे में फैसला होना है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार की कैबिनेट में कौन शपथ लेगा, इस बारे में पार्टी विधायकों के नाम तय करेगी। सूत्रों के हवाले से खबर आ रही थी कि कांग्रेस मंत्रिमंडल में चार पद मांग रही थी। दूसरी ओर सूत्रों के हवाले से यह भी कहा जा रहा है कि एक मंत्री पद जीतनराम मांझी की पार्टी को मिल सकता है। इसके लिए उनके बेटे एमएलसी संतोष सुमन के नाम की चर्चा है। कहा जा रहा है कि बिहार का गृह मंत्रालय हमेशा की तरह नीतीश कुमार अपने पास ही रखने वाले हैं। वहीं, बिहार विधानसभा स्पीकर का पद आरजेडी के हिस्से में जा सकता है। गौरतलब है कि सोमवार 16 अगस्त को बिहार की नई महागठबंधन सरकार के मंत्रिमंडल का गठन हो सकता है। नीतीश कुमार कैबिनेट के मंत्री इस दिन शपथ लेंगे। नीतीश कुमार ने हाल में बीजेपी के साथ राजनीतिक रिश्ता तोड़कर महागठबंधन का दामन थाम लिया और कभी धुर विरोधी रहे आरजेडी के साथ मिलकर बिहार में सरकार बना ली थी। नीतीश कुमार एक बार फिर जिस महागठबंधन का हिस्सा बने हैं, उसमें सात पार्टियां शामिल हैं। महागठबंधन का हिस्सा जेडीयू, आरजेडी, कांग्रेस, सीपीआईएमएलएल, सीपीआई, सीपीआईएम, और हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा हैं। 243 सदस्यों वाली विधानसभा में सभी के मिलाकर 160 विधायक हैं। आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली है।

शिक्षक की पिटाई से दलित छात्र की मौत पर मायावती ने की राजस्थान में राष्ट्रपति शासन की मांग

लखनऊ।

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष और यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने शिक्षक की पिटाई से एक दलित छात्र की मौत के मामले को लेकर रविवार को राजस्थान की कांग्रेस सरकार को दलितों, आदिवासियों और उपेक्षितों की सुरक्षा करने में नाकाम बताते हुए राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की। राजस्थान के जालौर जिले में एक दलित छात्र की मौत के बाद रविवार को तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बसपा प्रमुख मायावती ने ट्वीट किया, राजस्थान में आए दिन ऐसी जातिवादी दर्दनाक घटनाएं होती रहती हैं। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस की राज्य सरकार वहां खासकर दलितों, आदिवासियों एवं उपेक्षितों आदि की जान तथा मान-सम्मान की सुरक्षा करने में नाकाम है। इसलिए इस सरकार को बर्खास्त कर वहां राष्ट्रपति शासन लगाया जाये तो बेहतर है। इससे पहले मायावती ने अपने सिलसिलेवार ट्वीट में कहा, राजस्थान के जालौर जिले के सुराणा में निजी स्कूल के नौ साल के दलित छात्र द्वारा प्यास लगने पर मटके से पानी पीने के कारण सवर्ण जाति के जातिवादी सोच के शिक्षक ने उसे इतनी बेरहमी से पीटा कि उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। इस हृदय विदारक घटना की जितनी निंदा और भर्त्सना की जाए वह कम है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान के एक निजी स्कूल में एक अध्यापक ने दलित बच्चे नौ वर्षीय इंद्र कुमार मेघवाल को पानी पीने के बर्तन को छूने के कारण कथित तौर पर पीटा था, जिससे बच्चे की मौत हो गई। आरोपी शिक्षक छैल सिंह (40) को गिरफ्तार कर लिया गया है और उस पर हत्या और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। जालौर के सायला थाना क्षेत्र के सुराणा गांव के निजी स्कूल के छात्र इंद्र मेघवाल की 20 जुलाई को अध्यापक ने पिटाई की थी। उसकी शनिवार को अहमदाबाद के एक अस्पताल में मौत हो गई।

15 अगस्त से पहले दो 9 एमएम की पिस्टल, 40 जिंदा कारतूस सहित 4 आतंकी गिरफ्तार

-आईएसआई कनेक्शन सामने आया

चंडीगढ़ ।

आजादी की 75वीं वर्षगांठ का उत्सव देश मना रहा है ऐसे में पंजाब और दिल्ली पुलिस ने एक संयुक्त ऑपरेशन में 15 अगस्त से पहले चार आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनसे घातक हथियार भी बरामद किए हैं, जिनमें दो 9 एमएम की पिस्टल, 40 जिंदा कारतूस और 3 हैंड ग्रेनेड शामिल हैं। बताया जा रहा है कि ये आतंकी 15 अगस्त से पहले बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में थे। हालांकि पुलिस ने सुरक्षा कारणों से गिरफ्तार किए आतंकियों के बारे में यह जानकारी नहीं दी है कि उन्हें राज्य के किस हिस्से से गिरफ्तार किया गया है। पर पुलिस का दावा है कि उसने एक बड़े मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। सूत्रों का कहना है कि चारों आतंकियों से पूछताछ के दौरान चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। इनके तार पाकिस्तान की एजेंसी आईएसआई से जुड़े हुए बताए जा रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि चारों के तार कनाडा और आस्ट्रेलिया में बैठे आतंकी संगठनों के सदस्यों से भी जुड़े हुए हैं। पुलिस ने इनकी गिरफ्तारी पहले गिरफ्तार किए गए गैंगस्टरों से मिले इनपुट के आधार पर की गई है। पहले गिरफ्तार किए गए गैंगस्टरों ने बताया था कि ये चारों आतंकी पंजाब में माहौल को खराब करने की साजिशें रच रहे थे। चारों आतंकी विदेश में बैठे आतंकी अर्श डल्ला के संपर्क थे, जो देश में टारगेट किलिंग का भी आरोपी है। गौरतलब है कि 15 अगस्त के मद्देनजर देश के कई राज्यों में हाई अलर्ट जारी किया गया है। पंजाब पुलिस राज्य में कोई अनहोनी घटना न हो इसके लिए हर जिले में सर्च ऑपरेशन बीते सप्ताह से ही जारी हैं। पाकिस्तान बॉर्डर से लगते जिलों गुरदासपुर, बटाला और पठानकोट को अलर्ट पर रखा गया है। सीमा पार से आने वाले ड्रोन की गतिविधियों के चलते अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास स्थित गांवों में पुलिस और बीएसएफ द्वारा विशेष निगरानी की जा रही है। चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन को को संवेदनशील मानते हुए पुलिस यहां चप्पे-चप्पे पर सर्च ऑपरेशन चला रही है।

भारतीय मूल के बैंकर और डॉयचे बैंक के पूर्व को-सीईओ अंशु जैन का कैंसर से निधन

फ्रैंकफर्ट।। भारतीय मूल के बैंकर और डॉयचे बैंक के पूर्व सह-सीईओ अंशु जैन का निधन हो गया। 59 वर्षीय अंशु पिछले पांच साल से कैंसर से जूझ रहे थे। उनके परिवार ने एक बयान में कहा कि हमें गहरा दुख है कि हमारे प्यारे पति, बेटे और पिता अंशु जैन का निधन हो गया। उन्हें 2017 में अपनी इस बीमारी के बारे में पता लगा था। इस दौरान बैंक के अध्यक्ष एलेक्जेंडर वायनांड्स ने बयान जारी कर कहा कि अंशु ने बैंक के वैश्विक पूंजी बाजार कारोबार के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह 1995 में डॉयचे बैंक में शामिल हुए थे। इसके बाद 2009 में उन्हें प्रबंधन बोर्ड में नियुक्त किया गया था। वह 2012 से 2015 तक बैंक के सह-सीईओ थे। इसके बाद 2017 में वित्तीय सेवा फर्म के अध्यक्ष भी रहे।

डीयू से किया स्नातक

अंशु प्रसिद्ध बैंकर होने के साथ-साथ दुनिया के कई हिस्सों में पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण समूहों के साथ काम कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र ऑनर्स में स्नातक की की डिग्री ली थी। इसके बाद मैसाचुसेट्स एमहर्स्ट विश्वविद्यालय में फाइनेंस में एमबीए किया।

ब्रिटेन के रिसर्च संस्थान ने पहले रूसी रिसर्चर को ठुकराया, अब माफी मांगी

लंदन। ब्रिटेन के रिसर्च संस्थान ने रूस की एक युवा शोधकर्ता से माफी मांगी है। कुछ महीने पहले इसी संस्थान ने उस रिसर्चर को अपने यहां दाखिला देने का ऑफर वापस ले लिया था। ऑफर वापस लेते हुए संस्थान ने कहा था कि चूंकि वह रूसी है, इसलिए उसे इस संस्थान में दाखिला नहीं मिल सकता। अब संस्थान ने उस वैज्ञानिक से माफी मांगते हुए उन्हें फिर से अपने यहां ज्वाइन करने के लिए आमंत्रित किया है। ग्लासगो शहर में स्थित जीवन विज्ञान अनुसंधान संस्थान द बीटसन इंट्स्टीट्यूट ब्रिटेन से सबसे प्रतिष्ठित मेडिकल संस्थानों में एक है। यह संस्थान में कैंसर संबंधी अपने अनुसंधान के लिए मशहूर है। जब ये खबर सामने आई कि इस संस्थान ने एक रिसर्चर को दिया गया ऑफर सिर्फ उसकी राष्ट्रीयता यानी उसके रूसी होने के आधार पर वापस ले लिया, तो उसकी बड़े पैमाने पर निंदा हुई। रूसी शोधकर्ता ने इस संस्थान के पीएचडी कोर्स में दाखिला लेने के लिए अर्जी दी थी, जिसे स्वीकार करने के बाद संस्थान ने ठुकरा दिया था।

चौतरफा आलोचना के बाद संस्थान के एक सदस्य ने रूसी वैज्ञानिक को संदेश भेजा है। इसमें उनसे माफी मांगी गई है। साथ उनसे संस्थान में आकर वहां अनुसंधान कार्य में शामिल होने का आग्रह किया गया है। इस संदेश की कॉपी को रूसी रिसर्चर के एक दोस्त ने ट्विटर पर पोस्ट किया है। इसके पहले जब ऑफर वापस लिया गया था, तब भेजे गए संदेश में संस्थान के एक पदाधिकारी ने लिखा था- 'मुझे बताया गया है कि हाल में बीटसन इंस्टीट्यूट ने एक नई नीति अपनाई है। उसके तहत मैं आपको नियुक्त करने में असमर्थ हूं, क्योंकि आप रूसी हैं। मुझे इसका अफसोस है और मैं मानता हूं कि यह अनुचित है। लेकिन रूस में जो हो रहा है, उससे आप जैसे युवा वैज्ञानिकों पर बहुत खराब असर पड़ेगा। मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य में मैं आपके लिए पीएचडी कोर्स में स्थान ढूंढ पाऊंगा।'

सरकार अब किसी आंदोलन समर्थक को बख्शने के मूड में नहीं, शुरू हुआ दमन

कोलंबो। श्रीलंका में अरागलया (सरकार विरोधी आंदोलन) के सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ-साथ अब उनके समर्थकों का दमन भी शुरू हो गया है। श्रीलंका सरकार ने स्कॉटलैंड की नागरिक और रिसर्चर केलिह फ्रेजर का वीजा रद्द कर दिया है। फ्रेजर देश में चार महीने से ज्यादा समय से चल रहे अरागलया का डॉक्यूमेंटेशन कर रही थीं। साथ ही वे इस आंदोलन के बारे में जुटाई गई जानकारियां लगातार सोशल मीडिया पर पोस्ट कर रही थीं। अब सामने आई खबर के मुताबिक श्रीलंका के आव्रजन विभाग के अधिकारी बीते दो अगस्त को फ्रेजर के निवास पर गए थे। तब उन्होंने उनका पासपोर्ट जब्त कर लिया। अब खबर आई है कि उनका वीजा रद्द कर दिया गया है।

'अगला नंबर तुम्हारा' अब हैरी पॉटर की लेखिका को मिली धमकी, रुश्दी का किया था समर्थन

लंदन। मशहूर लेखक सलमान रुश्दी पर हमले के बाद उपन्यास हैरी पॉटर की लेखिका जेके राउलिंग को भी जान की धमकी मिली है। उनको यह धमकी रुश्दी के समर्थन में एक ट्वीट करने के बाद मिली है। दरअसल, 57 वर्षीय लेखिका राउलिंग ने सलमान रुश्दी पर हमले के बाद ट्विटर पर लिखा था कि इस तरह की घटना से वह काफी आहत हैं। उम्मीद करती हैं कि उपन्यासकार जल्द ठीक हो जाएंगे। उनके इस ट्वीट के जवाब में एक यूजर ने लिखा, 'चिंता मत करिए। अगला नंबर आपका है।'

राउलिंग ने इस ट्वीट का स्क्रीनशॉट भी साझा किया है। इस धमकी के बाद राउलिंग के समर्थन में कई लोगों ने ट्वीट किया। इसके बाद स्क्रीनशॉट साझा करते हुए उन्होंने लिखा कि आप लोगों के समर्थन के लिए शुक्रिया।

धमकी देने वाले ने हादी मतार का किया समर्थन

जिस ट्विटर हैंडल से राउलिंग को धमकी दी गई है। उसने सलमान रुश्दी पर हमला करने वाले शख्स हादी मतार की प्रशंसा की है। उसने लिखा है कि यह शिया योद्धा व क्रांतिकारी है। धमकी मिलने के बाद राउलिंग ने ट्विटर को भी आड़े हाथों लिया। उन्होंने ट्विटर को टैग करते हुए लिखा, ये आपकी गाइडलाइंस हैं, ना? इसके बाद उन्होंने हिंसा और आतंकवाद पर ट्विटर की गाइडलाइंस को भी साझा किया है।

सलमान रुश्दी की हालत में सुधार, वेंटिलेटर से हटाया गया

न्यूयार्क। भारतीय मूल के उपन्यासकार और विश्व प्रसिद्ध लेखक सलमान रुश्दी की सेहत को लेकर थोड़ी राहत की खबर आ रही है। ताजा जानकारी के मुताबिक रुश्दी को वेंटिलेटर से हटा दिया गया है और फिलहाल वह बातचीत करने में सक्षम हो गए हैं। बता दें कि अमेरिका के न्यूयॉर्क में आयोजित एक कार्यक्रम में शुक्रवार को रुश्दी पर 24 साल के युवक ने कई बार चाकू से हमले कर गंभीर रूप से घायल कर दिया था। इस हमले में उनकी हाथ की नसें फट गईं, लीवर को नुकसान पहुंचा है। ईरानी कट्टरपंथियों द्वारा मौत का फतवा जारी होने के बाद कई वर्षों तक छिपे रहे सलमान रुश्दी पर पश्चिमी न्यूयॉर्क में भाषण देने से ठीक पहले मंच पर हमला करने को लेकर दुनियाभर के लेखकों और राजनेताओं ने निंदा की है।

प्रख्यात लेखक पर चाकू से हमला करने वाले 24 वर्षीय संदिग्ध हादी मतार 'शिया चरमपंथियों' और ईरान के इस्लामी रिवोल्यूशरी गार्ड से प्रभावित था और उसका अनुकरण करता था। मीडिया में आई खबरों में यह दावा किया गया है कि हमलावर न्यूजर्सी का रहने वाला है लेकिन पुलिस इस बात का जवाब ढूंढने में जुटी है कि हमलावर ने इतनी बेरहमी से रुश्दी पर हमला क्यों किया? अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने एक बयान में कहा कि जिल बाइडन और मैं न्यूयॉर्क में सलमान रुश्दी पर हुए शातिर हमले के बारे में जानकर हैरान और दुखी हैं।

रिपोर्ट- चीन की सैन्य आपूर्ति-गुणवत्ता से बांग्लादेश असंतुष्ट, पारदर्शिता और जवाबदेही की भी कमी

ढाका। लंबे समय से चीन की कोशिश भारत के पड़ोसी देशों में प्रमुख रक्षा निर्यातक देश के रूप में उभरने की रही है। इसके लिए वह हथियारों की आपूर्ति के साधन को सैन्य निर्भरता से बांधने की कोशिश (इंस्ट्रुमेंटम रेग्नि) में भी है, लेकिन उसका उत्पादन बहुत ही कम गुणवत्ता का है।

एक मीडिया रिपोर्ट में बताया गया कि चीनी रक्षा आपूर्ति के साधन पश्चिमी मानकों के हिसाब से कम गुणवत्ता वाले होने के कारण चीन की योजना कमजोर पड़ रही है। हाल ही में बांग्लादेश की सेना ने चीन के उत्तरी उद्योग निगम (नोरिन्को) द्वारा टैंक, गोला-बारूद की आपूर्ति पर नाराजगी जताते हुए इसे परीक्षण न करने योग्य बताते हुए खारिज कर दिया। चीन से मिले सैन्य आपूर्ति की गुणवत्ता से बांग्लादेश असंतुष्ट प्रतीत होता है। दरअसल, बांग्लादेश की आर्थिक स्थिति के कारण उसे चीनियों की तरफ रुख करने के लिए मजबूर होना पड़ा है, जिसने पश्चिम के मुकाबले काफी सस्ते में आपूर्ति का वादा किया। इसके तहत ढाका ने नोरिन्को निर्मित (ज्यादातर कॉपी किए) हल्के हथियार, तोपखाने और बख्तरबंद वाहन लिए थे।

कई चीनी उपकरणों से असंतुष्टि

बांग्लादेश सरकार ने बख्तरबंद इकाइयों के लिए 2011 से 2020 के बीच चीन से कुल तीन अरब डॉलर के रक्षा उपकरण खरीदे। 2011 में उसने चीनी एमबीटी-2000 टैंक खरीदा जबकि हाल ही में उसने टाइप 69 बेड़े को संशोधित किया। उसने चीन निर्मित कई उपकरणों से अन्य हथियारों को बदला। लेकिन

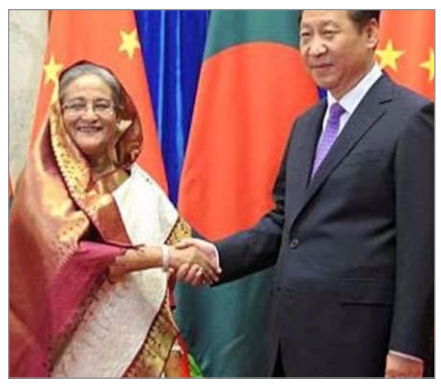

इनसे सेना असंतुष्ट है। उसने चाइना शिपबिल्डिंग और ऑफशोर इंटरनेशनल द्वारा मुहैया कराए गए रडार के प्रति भी असंतुष्टि जताई।

पारदर्शिता-जवाबदेही की कमी

इससे पहले, 2021 में एक रैंड कॉर्पोरेशन (अमेरिका स्थित थिंकटैंक) के अध्ययन ने स्पष्ट रूप से चीनी रक्षा अनुबंधों में एक कमी की ओर इशारा किया था, जिसमें कहा गया था कि पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी है।

पाक सरकार की संविधान संशोधन योजना के खिलाफ पीओके में प्रदर्शन, कई इलाकों में कर्फ्यू जैसे हालात

पीओके। पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के जिलों में 15वां संविधान संशोधन लाने की पाकिस्तान सरकार की योजना के खिलाफ बड़े पैमाने पर लोगों ने प्रदर्शन शुरू किए हैं। ये संशोधन स्थानीय सरकार की वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों को इस्लामाबाद में स्थानांतरित कर देंगे।सरकार के इस फैसले के खिलाफ क्षेत्र के सभी 10 जिलों के नागरिकों में आक्रोश है। विरोध प्रदर्शनों के चलते रावलकोट, बाग, पुंछ, मुजफ्फराबाद और नीलम घाटी में हालात खराब हैं। क्षेत्रीय कार्यकर्ता शब्बीर चौधरी के मुताबिक, संविधान में 15वें संशोधन को पेश करने से पाकिस्तान इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों को नियंत्रित करने पर नजरें गढ़ाए है। इससे क्षेत्र में सब कुछ पाकिस्तानी सेना और देश के प्रॉपर्टी कारोबारियों के नियंत्रण में आ जाएगा।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान अपने साम्राज्यवादी एजेंडे को छिपाने के लिए इस्लाम का इस्तेमाल कर रहा है। उन्होंने कहा, इसके बाद पाकिस्तान में 80 अरब रुपये की पीओजेके से संबंधित संपत्ति कश्मीर संपत्ति परिषद के अंतरर्गत लाई जाएगी और पीओजेके को इसकी बिक्री तक का अधिकार नहीं होगा।

कर्फ्यू जैसे हालात

डेली सिख के लिए लिखते हुए हरजाप सिंह ने कहा कि 1 जुलाई से क्षेत्र में महिलाएं और बच्चे सड़कों पर बैठकर आजादी के नारे लगा रहे हैं और सेना से बैरक में वापस करने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने कहा, क्षेत्र में कर्फ्यू जैसे हालात हैं और कुछ जगहों पर इंटरनेट सेवा तक आंशिक रूप से बंद है। टायर जलने के कारण सड़कें सभी तरह के वाहनों के लिए बंद हैं और पाकिस्तानी मीडिया को भी यहां के कवरेज से रोका जा रहा है। 25 जुलाई से प्रदर्शन बढ़े हैं।

अमेरिकियों को अभी नहीं मिलने वाली है महंगाई से निजात, आसमान पर पहुंचे खाद्य पदार्थों के दाम

वाशिंगटन। जुलाई में मुद्रास्फीति दर में मामूली गिरावट के बावजूद अमेरिका को अभी महंगाई की समस्या से निजात मिलने की संभावना नहीं है। जुलाई के आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद विशेषज्ञों ने ये बात कही है। जुलाई में अमेरिका में महंगाई की दर 8.5 फीसदी दर्ज हुई। जून में ये दर 9.1 फीसदी थी। विशेषज्ञों ने ध्यान दिलाया है कि मुद्रास्फीति दर अभी भी असाधारण रूप से ऊंची है। अमेरिकी सेंट्रल बैंक-फेडरल रिजर्व की तरफ से स्वीकार्य मुद्रास्फीति दर की तय सीमा दो फीसदी है। जुलाई में ये दर उस सीमा से चारे चार गुना ज्यादा रही। इसका अर्थ है कि अमेरिका के लोगों को अभी भी ऊंची महंगाई दर का सामना करना पड़ रहा है।

जुलाई में मुद्रास्फीति वृद्धि दर में गिरावट का प्रमुख कारण ईंधन के दाम का घटना रहा। खास कर अमेरिका में प्राकृतिक गैस की कीमत में कमी आई। विशेषज्ञों के मुताबिक जुलाई में कोर इन्फ्लेशन रेट (मुख्य मुद्रास्फीति दर) 5.9 फीसदी रही। कोर मुद्रास्फीति दर में ईंधन और खाद्य पदार्थों की कीमतों को शामिल नहीं किया जाता है। सबसे ज्यादा चिंता का संकेत यह उभरा है कि अमेरिका में श्रमिक उत्पादकता दर में गिरावट आ रही है। अर्थशास्त्री डेविड पी गोल्डमैन ने कहा है कि इसके परिणामस्वरूप अमेरिकावासियों को लंबे समय तक महंगाई का सामना करना पड़ेगा।

दरअसल गैस और कच्चे तेल के दाम में गिरावट अमेरिका और चीन जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक वृद्धि दर गिरने की आशंका के कारण आई है। अमेरिका के बारे में माना जा रहा है कि

वहां मंदी की शुरुआत हो चुकी है। ऐसे में कारोबार जगत में तेल और गैस की खपत गिरने का अनुमान है। जुलाई में अमेरिका में गैस के दाम में 7.7 फीसदी की गिरावट आई। लेकिन जिस दाम पर गैस यहां मिल रही थी, वह 2021 के जुलाई तुलना में 44 फीसदी ऊंची थी।

टीवी चैनल सीएनएन के आर्थिक विश्लेषक राना फोरुहर ने कहा है कि खाद्य पदार्थों, आवास और बिजली पर होने वाले खर्च में गिरावट के संकेत नहीं हैं। इसकी वजह यह है कि इन खर्चों में लोगों के पास कटौती करने का विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा- 'बहुत से लोग छुट्टी मनाने, नई कार खरीदने, घरों में नया सामाना लाने आदि जैसे खर्चों में कटौती कर रहे हैं। मेरी राय में इस वजह से इन चीजों की मांग घटी है और उसका असर मुद्रास्फीति दर पर पड़ रहा है। लेकिन जिन चीजों में कटौती संभव नहीं है, उनकी महंगाई जारी है।'

खाद्य पदार्थों के दाम में वृद्धि जुलाई में भी जारी रही। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक किराना (ग्रॉसरी) इंडेक्स में जितनी बढ़ोतरी इस समय हुई है, उतना 1979 के बाद कभी नहीं देखा गया। आवास पर खर्च उससे भी बड़ी समस्या बनी हुई है। मकानों के दाम और किराये दोनों बहुत ऊंचे स्तर पर हैं। अर्थशास्त्रीय डेविड पी गोल्डमैन के मुताबिक सरकारी आंकड़ों में आवासीय महंगाई दर साढ़े छह फीसदी दिखाई गई है, जबकि रियल एस्टेट कारोबार पर नजर रखने वाली एक प्रतिष्ठित वेबसाइट पर जुलाई में ये वृद्धि 15 फीसदी से ऊंची रही। यानी आवास पर लोगों को उससे अधिक खर्च करना पड़ रहा है, जितना सरकारी आंकड़ों में बताया गया है।

श्रीलंका ने अपने बंदरगाह पर आने के लिए चीनी पोत को दी अनुमति, पाकिस्तानी पोत भी पहुंचा

हंबनटोटो। चीनी शोध पोत युआन वांग 5 को श्रीलंका सरकार ने हंबनटोटा बंदरगाह पर आने की अनुमति दे दी है। श्रीलंका के बंदरगाह मास्टर निर्मल पी सिल्वा ने अब कहा है कि उन्हें 16 से 22 अगस्त तक हंबनटोटा में जहाज को बुलाने के लिए विदेश मंत्रालय की मंजूरी मिल गई है। भारत सरकार ने इस उच्च तकनीकी से लैस शोध पोत को लेकर चिंता व्यक्त की थी कि जहाज भारत के खिलाफ जासूसी कर सकता है। इसे लेकर भारत ने कोलंबो में शिकायत भी दर्ज कराई थी। अधिकारियों ने कहा कि द्वीप राष्ट्र की सरकार ने पड़ोसी भारत की चिंताओं के बाद भी चीनी शोध पोत को द्वीप पर जाने की अनुमति दी।

चीन का जासूसी पोत युआन वांग-5 पोत बैलिस्टिक मिसाइल और सैटेलाइटों को ट्रैक करता है। भारत ने श्रीलंका के सामने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चिंता जाहिर करते हुए कहा था कि जहाज पर लगे ट्रैकिंग सिस्टम इस क्षेत्र में भारतीय अवसंरचनाओं के तटीय बनावट की जानकारी जुटा सकते हैं। इसका इस्तेमाल चीन की सैन्य पनडुब्बियों व पोतों के लिए भी किया जा सकता है। चीनी पोत को हंबनटोटा में रुकने की इजाजत देने के मसले पर चीन में भी पक्ष-विपक्ष में तकरार जारी है। विपक्ष ने सरकार पर इस मुद्दे को गलत तरीके से संभालने का आरोप लगाते हुए कहा कि हंबनटोटा रणनीतिक रूप से संवेदनशील जगह है। बंदरगाह को बड़े पैमाने पर चीनी ऋण से विकसित किया गया है। चीनी जहाज को यहां रुकने की इजाजत देने के मामले में मुश्किल वक्त में साथ देने वाले भारत की चिंताओं पर गौर नहीं किया गया। भारत हिंद महासागर में चीनी जहाजों के प्रवेश को लेकर हमेशा सख्ती से पेश आता रह है।

गौरतलब है कि भारत ने चीन के उन आरोपों को भी खारिज कर दिया जिसमें उसने कहा था कि नई दिल्ली ने कोलंबो पर चीनी शोध पोत के हंबनटोटा बंदरगाह की यात्रा को रोकने के लिए दबाव डाला।

चीनी विदेश मंत्रालय ने भारत की ओर इशारा करते हुए कहा कि कुछ देशों के लिए श्रीलंका पर दबाव बनाने के लिए तथाकथित सुरक्षा चिंताओं का हवाला देना पूरी तरह से अनुचित है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि चूंकि श्रीलंका आर्थिक और राजनीतिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, श्रीलंका के सामान्य आदान-प्रदान और अन्य देशों के साथ सहयोग में हस्तक्षेप करना उसकी कमजोरी का फायदा उठाना है, जो नैतिक रूप से गैर-जिम्मेदार है और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नियंत्रित करने वाले बुनियादी मानदंडों के खिलाफ है।

कोलंबो ने बीजिंग को भारत की आपत्तियों के बाद अनिश्चित काल के लिए यात्रा स्थगित करने के लिए कहा था, लेकिन श्रीलंका के बंदरगाह मास्टर निर्मल पी सिल्वा ने अब कहा है कि उन्हें 16 से 22 अगस्त तक हंबनटोटा में जहाज को बुलाने के लिए विदेश मंत्रालय की मंजूरी मिल गई है। मीडिया रिपोर्ट्स् के मुताबिक, सिल्वा ने बताया कि आज मुझे राजनयिक मंजूरी मिली। हम बंदरगाह पर रसद सुनिश्चित करने के लिए जहाज द्वारा नियुक्त स्थानीय एजेंट के साथ काम करेंगे। गौरतलब है कि चीनी बैलिस्टिक मिसाइल और उपग्रह ट्रैकिंग जहाज %युआन वांग 5% को गुरुवार को पहुंचना था और 17 अगस्त तक बंदरगाह पर रहना था। श्रीलंका पोर्ट्स अथॉरिटी (एसएलपीए) के हार्बर मास्टर ने कहा कि जहाज योजना के मुताबिक बंदरगाह पर नहीं पहुंचा। स्थानीय अधिकारियों ने कहा कि जहाज को हंबनटोटा के पूर्व में 620 समुद्री मील दूर है और धीरे-धीरे बंदरगाह की ओर बढ़ रहा है। 12 जुलाई को श्रीलंका के विदेश मंत्रालय ने हंबनटोटा बंदरगाह पर जहाज के डॉकिंग के लिए मंजूरी दी थी। 8 अगस्त को मंत्रालय ने कोलंबो में चीनी दूतावास को लिखे एक पत्र में जहाज के नियोजित डॉकिंग को स्थगित करने का अनुरोध किया था। हालांकि, इसने इस तरह के अनुरोध का कारण नहीं बताया। 'युआन वांग 5' उस समय तक हिंद महासागर में प्रवेश कर चुका था। श्रीलंका ने स्थगन का अनुरोध तब किया जब भारत सरकार ने सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए इस पर कड़ी आपत्ति जताई थी। एसएलपीए ने कहा कि हालांकि एक चीनी कंपनी के पास हंबनटोटा बंदरगाह का प्रभार है, लेकिन नेविगेशन और परिचालन संबंधी मामले वह खुद नियंत्रित कर रहा है। इस बीच चीन निर्मित पाकिस्तान का नया युद्धपोत पीएनएस तैमूर भी कोलंबो बंदरगाह पहुंच गया है। यह पश्चिमी सागर में श्रीलंकाई नौसेना के साथ एक संयुक्त अभ्यास करेगा। श्रीलंका ने पाकिस्तानी पोत को यह इजाजत बांग्लादेश सरकार द्वारा चटगांव बंदरगाह पर रुकने की अनुमति देने से इनकार करने के बाद दी।

शी जिनपिंग के स्वागत के लिए सऊदी की राजधानी को सजा रहे हैं प्रिंस सलमान

रियाद। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग अगले हफ्ते सऊदी अरब की यात्रा पर आ सकते हैं। ये खबर ब्रिटिश अखबार द गार्जियन ने दी है। अखबार ने बताया है कि रियाद में शी जिनपिंग के उस स्तर के स्वागत की तैयारी चल रही है, जैसा स्वागत डोनाल्ड ट्रंप का तब हुआ था, जब वे अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में पहली बार सऊदी अरब आए थे।

अखबार ने ध्यान दिलाया है कि जून में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन का फीका स्वागत हुआ, जिसे अमेरिका और सऊदी अरब के रिश्तों में आए तनाव की निशानी माना गया। आम राय है कि निजी तौर पर बाइडन और सऊदी अरब के युवराज प्रिंस मोहम्मद-बिन-सलमान एक दूसरे को पसंद नहीं करते। अब प्रिंस सलमान शी जिनपिंग का गर्मजोशी से स्वागत करके अमेरिका को फिर बाइडन के प्रति अपनी नापसंदगी का संदेश भेजना चाहते हैं। व्यावहारिक रूप से सऊदी अरब की सत्ता अब प्रिंस सलमान के हाथ में ही है।

शी जिनपिंग ने 2019 में कोरोना महामारी की शुरुआत के बाद से किसी देश की यात्रा नहीं की है। इस तरह महामारी के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा के तौर पर वे सऊदी अरब जाएंगे। द गार्जियन ने कहा है कि शी की इस यात्रा से यह धारणा मजबूत होगी कि चीन और सऊदी अरब अब निकट सहयोगी बन गए हैं। हालांकि दोनों देशों के करीब आने की शुरुआत दो दशक पहले ही हो गई थी, लेकिन प्रिंस सलमान के हाथ में सत्ता आने के बाद से इसकी गति काफी तेज हो गई है। इस दौर में हांगकांग से लेकर शिनजियांग तक के मसलों पर सऊदी अरब ने चीन का समर्थन किया है, जबकि पश्चिमी देशों ने इन दोनों जगहों पर मानव अधिकारों के हनन के आरोप लगाते रहे हैं। अमेरिकी थिंक टैंक हडसन इंस्टीट्यूट में सीनियर फेलॉ मोहम्मद अल याह्या ने द गार्जियन से कहा- 'चीन सऊदी अरब का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। वह सऊदी कच्चे तेल का सबसे बड़ा खरीदार है। भू-राजनीतिक लिहाज से चीन पश्चिम एशिया के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह अफ्रीका और अन्य जगहों पर सैनिक अड्डे बनाने की कोशिश में है। पहले उसके हित सिर्फ व्यापारिक थे। लेकिन अब वह इस क्षेत्र को रणनीतिक नजरिए से देखने लगा है।' हडसन ने कहा कि उस क्षेत्र में चीन अमेरिका का मुख्य प्रतिद्वंद्वी बन गया है, इसलिए

अमेरिका में शी की इस यात्रा पर कड़ी नजर रखी जाएगी। शी जिनपिंग को रियाद यात्रा के लिए आमंत्रण इस वर्ष मार्च में ही दिया गया था। उनके स्वागत के लिए चल रही जोरदार तैयारियों का कारण यह है कि प्रिंस सलमान चीन से काफी खुश रहे हैं। चीन ने यमन में सऊदी अरब के आक्रमण, कतर के उसके बायकॉट, और पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या पर कोई टिप्पणी नहीं की है। पर्यवेक्षकों की राय है कि असल में चीन पश्चिम एशिया में उस जगह को भर रहा है, जो अमेरिका की यहां दिलचस्पी घटने से खाली हुई है। द गार्जियन की रिपोर्ट में बताया गया है कि शी इस यात्रा के दौरान रियाद, जेद्दाह और नियोम जाएंगे। इन सभी शहरों को इस समय शानदार ढंग से सजाया जा रहा है।

संपादकिय

पर्यावरण और किसान

बसे महत्वपूर्ण यह कि इस बॉयो फ्यूल प्लांट से एक लाख लीटर एथनॉल तैयार किया जा सकेगा। जिसके लिये प्रतिदिन सात सौ टन फसलों के अवशेष का दोहन किया जा सकेगा। बताया जा रहा है कि पेट्रोल के साथ एथनॉल मिलाये जाने से देश को प्रतिवर्ष चार अरब डॉलर की दुर्लभ विदेशी मुद्रा की बचत हो सकेगी।

हरियाणा की पानीपत रिफाइनरी में टू-जी एथनॉल प्लांट का शुरू होना निश्चित रूप से बहुआयामी लाभों को हकीकत में बदलना ही है। एक ओर जहां किसानों को पराली जलाने की तोहमत से बचाना है, वहीं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बढ़ते प्रदूषण पर अंकुश लगाने की सार्थक पहल है। इससे जहां किसानों की आय बढ़ेगी, वहीं स्थानीय लोगों के लिये रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। सबसे महत्वपूर्ण यह कि इस बॉयो फ्यूल प्लांट से एक लाख लीटर एथनॉल तैयार किया जा सकेगा। जिसके लिये प्रतिदिन सात सौ टन फसलों के अवशेष का दोहन किया जा सकेगा। बताया जा रहा है कि पेट्रोल के साथ एथनॉल मिलाये जाने से देश को प्रतिवर्ष चार अरब डॉलर की दुर्लभ विदेशी मुद्रा की बचत हो सकेगी। इसके चलते अभी पेट्रोल में जो दस फीसदी एथनॉल मिलाया जाता है, उसकी जगह बीस फीसदी एथनॉल अप्रैल 2023 से मिलाया जा सकेगा। वर्ष 2025 तक देश के सभी पेट्रोल पंपों पर एथनॉल मिश्रित पेट्रोल मिलने लगेगा। निश्चित रूप से जैव ईंधन प्रकृति की रक्षा करता है। पराली जलाने से धरती की पीड़ा को कुछ हद तक कम किया जा सकेगा। वहीं दूसरी ओर पराली काटने व उसके निस्तारण को लेकर गांव-देहात में जो परेशानी होती थी, उसका समाधान संभव है। साथ ही किसानों व आपूर्तिकर्ताओं को आर्थिक लाभ भी होगा। इसमें न केवल पराली बल्कि गेहूं का भूसा, मक्का के अवशेष, गन्ने की खोई व सड़े-गले अनाज का भी उपयोग हो सकेगा। निश्चित रूप से जहां अनुपयोगी वस्तुओं का उपयोग हो सकेगा, वहीं कृषकों को अतिरिक्त आय का बोनस भी मिलेगा। वहीं इस पहल का विस्तार पंजाब, उत्तर प्रदेश व राजस्थान आदि राज्यों में भी किया जाना चाहिए, जिन पर आरोप लगते रहे हैं कि उनके किसानों द्वारा पराली जलाने से दिल्ली में प्रदूषण की समस्या पैदा होती है। हर साल के अंत में दिल्ली जिस धुंध की चपेट में आ जाती थी, उम्मीद है अब उसमें निश्चित रूप से कुछ कमी आ सकेगी। निस्संदेह, जैव ईंधन उत्पादन के ऐसे प्रयास सारे देश में किये जाने चाहिए क्योंकि भारत के तमाम शहर प्रदूषण की दृष्टि से संकटपूर्ण स्थिति से गुजर रहे हैं। लेकिन सरकार के ये प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक किसानों की सक्रिय भागीदारी इस मुहिम में नहीं होती। किसानों को समझाया जाना चाहिए कि फसलों के अवशेष जलाने से जो प्रदूषण पैदा होता है उससे उनकी धरती, परिवार व समाज का अहित होता है। किसानों की सेहत पर भी इसका प्रतिकूल असर होता है। इस मुहिम में किसान की भागीदारी अनिवार्य शर्त है। जहां वे इससे अपनी अतिरिक्त आय जुटा सकते हैं, वहीं अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर दे सकते हैं। सरकार को भी किसानों को बढ़ती महंगाई में राहत देने के लिये खाद, उपकरणों तथा बीजों की कीमत में कुछ छूट देने का प्रयास करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह बिल्कुल नहीं है कि इस अभियान को मुफ्त की राजनीति का हिस्सा बनाया जाये। लेकिन जब कर्मचारियों को महंगाई बढ़ने पर भत्ता दिया जा सकता है तो अपरोक्ष रूप से किसान को भी राहत देने की ईमानदार कोशिश होनी चाहिए। वहीं दूसरी ओर खेतों से एथनॉल प्लांट तक फसलों के अवशेष ले जाने वाले श्रमिकों, वाहन चालकों तथा प्लांट में काम करने वाले श्रमिकों को भी इससे रोजगार मिलता है।

कार्टून

धर्म जीवन

आचार्य रजनीश ओशो

पृथ्वी के नीचे दबे हुए, पहाड़ों की कंदराओं में छिपे हुए, समुद्र की तलहटी में खोजे गए ऐसे बहुत से पशुओं के अस्थिपंजर मिले हैं, जिनका अब कोई भी निशान शेष नहीं रह गया। वे कभी थे। आज से दस लाख साल पहले पृथ्वी बहुत से सरीसृपों से भरी थी, सरकने वाले जानवरों से भरी थी, लेकिन आज हमारे घर में छिपकली के अतिरिक्त उनका कोई प्रतिनिधि नहीं रह गया है। छिपकली भी बहुत छोटा प्रतिनिधि है। दस लाख साल पहले उसके पूर्वज हाथियों से भी पांच गुने और दस गुने बड़े थे। वे सब कहां खो गए? इतने शक्तिशाली पशु पृथ्वी से कैसे विनष्ट हो गए? किसी ने उन पर हमला किया? किसी ने एटम बम, हाइड्रोजन बम गिराया? नहीं, उनके खत्म हो जाने की बड़ी अदभुत कथा है। उन्होंने कभी सोचा भी न होगा कि वे समाप्त हो जाएंगे। वे समाप्त हो गए अपनी संतति के बढ़ जाने के कारण! वे इतने ज्यादा हो गए कि पृथ्वी पर जीना उनके लिए असंभव हो गया। भोजन कम हुआ, पानी कम हुआ, लिविंग स्पेस कम हुई, जीने के लिए जितनी जगह चाहिए, वह कम हो गई। उन पशुओं को बिलकुल आमूल मिट जाना पड़ा! ऐसी दुर्घटना आज तक मनुष्य-जाति के जीवन में नहीं आई है, लेकिन भविष्य में आ सकती है। आज तक न आई उसका कारण यह था कि प्रकृति ने निरंतर मृत्यु को और जन्म को संतुलित रखा है। दस आदमी पैदा होते थे बुद्ध के जमाने में, तो सात या आठ व्यक्ति उसमें जन्म के बाद मर जाते थे। दुनिया की आबादी कभी इतनी नहीं बढ़ी थी कि भोजन की कमी पड़ जाए, स्थान की कमी पड़ जाए। फिर विज्ञान और आदमी की निरंतर खोज ने, और मृत्यु से लड़ाई लेने ने, वह स्थिति पैदा कर दी कि आज दस बच्चे पैदा होते हैं सुसंस्कृत, सभ्य मुल्क में, तो मुश्किल से एक बच्चा मरता। स्थिति बिल्कुल उलटी हो गई है। उम्र भी लंबी हुई। औसत उम्र अस्सी और बयासी वर्ष तक कुछ मुल्कों में पहुंच गई है। स्वाभाविक परिणाम जो होना था वह यह हुआ कि जन्म की दर तो पुरानी रही, मृत्यु की दर हमने कम कर दी। अकाल होते थे, अकाल बंद कर दिए। महामारियां आती थीं, प्लेग होता था, मलेरिया होता था, हैजा होता था, वे हमने कम कर दिए। हमने मृत्यु के बहुत से द्वार रोक दिए और जन्म के सब द्वार खुले छोड़ दिए।

कैसी आजादी के पक्षधर हैं हम?

लेखक- योगेश कुमार गोयल

आजादी के दीवानों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि जिस देश को आजाद कराने के लिए वे इतनी कुर्बानियां दे रहे हैं, उस राष्ट्र की ऐसी दुर्दशा होगी और आजादी की तस्वीर ऐसी हो जाएगी। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश ने विकास के मार्ग पर तेजी से कदम बढ़ाए और विकास के अनेक सोपान तय किए हैं। तकनीकी कौशल हासिल करते हुए देश अंतरिक्ष तक जा पहुंचा है लेकिन महिलाओं से दुर्व्यवहार की घटनाएं जिस प्रकार लगातार बढ़ रही हैं और समाज में अपराधों की तादाद भी बढ़ रही है, ऐसे में देश की गुलामी का दौर देख चुके कुछ बुजुर्ग तो अब कहते सुने भी जाते हैं कि गुलामी के दिन आज की इस आजादी से कहीं बेहतर थे,

(स्वतंत्रता दिवस पर विशेष)

प्रतिवर्ष कैलेंडर की घूमती तारीख की तरह 15 अगस्त का विशेष दिन हर साल की भांति एक बार फिर हमारे सामने है। यह दिन प्रत्येक भारतवासी के लिए गौरवशाली दिन है क्योंकि इसी दिन भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिली थी। स्वतंत्रता दिवस को लेकर देश के प्रत्येक नागरिक के दिलोदिमाग में एक अलग ही जज्बा और उत्साह समाहित रहता है। इस बार स्वतंत्रता दिवस की महत्ता इसलिए भी बहुत ज्यादा है क्योंकि इस वर्ष देश की गुलामी की जंजीरों से मुक्ति के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाया जा रहा है और प्रधानमंत्री के आव्हान पर 'हर घर तिरंगा' अभियान भी चलाया जा रहा है। हालांकि जब हर वर्ष देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ राष्ट्र की आन-बान और शान के प्रतीक इसी तिरंगे के नीचे खड़े होकर बहुतेरे ऐसे जनप्रतिनिधियों को भी देश की रक्षा व प्रगति का संकल्प लेते देखते हैं, जो वर्षभर सरेआम लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते देखे जाते हैं तो मन में यही सवाल उठता है कि आखिर ऐसी संकल्प अदायगी से देश को हासिल क्या होता है? देश को आजाद हुए पूरे 75 बरस हो चुके हैं लेकिन आजादी के इन 75 वर्षों में लोकतंत्र के पवित्र स्थल संसद और विधानसभाओं के हालात साल दर साल किस कदर बदले हैं, वह किसी से छिपा नहीं है, जहां अभद्रता की सीमा पार करते जनप्रतिनिधि अक्सर गाली-गलौच, उठापटक से लेकर कुर्ता-फाड़ राजनीति तक उतर आते हैं। वर्षों की गुलामी के बाद मिली आजादी को आज हम जिस रूप में संजोकर रख पाए हैं, सभी के सामने है।

आजादी के दीवानों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि जिस देश को आजाद कराने के लिए वे इतनी कुर्बानियां दे रहे हैं, उस राष्ट्र की ऐसी दुर्दशा होगी और आजादी की तस्वीर ऐसी हो जाएगी। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश ने विकास के मार्ग पर तेजी से कदम बढ़ाए और विकास के अनेक सोपान तय किए हैं। तकनीकी कौशल हासिल करते हुए देश अंतरिक्ष तक जा पहुंचा है लेकिन महिलाओं से दुर्व्यवहार की घटनाएं जिस प्रकार लगातार बढ़ रही हैं और समाज में अपराधों की तादाद भी बढ़ रही है, ऐसे में देश की गुलामी का दौर देख चुके कुछ बुजुर्ग तो अब कहते सुने भी जाते हैं कि गुलामी के दिन आज की इस आजादी से कहीं बेहतर थे, जहां अपराधों को लेकर मन में भय व्याप्त रहता था किन्तु कड़े कानून बना दिए जाने के बावजूद अपराधियों के मन में अब किसी तरह का भय नहीं दिखता। 'सैयां भये कोतवाल तो डर काहे का' कहावत हर कहीं चरितार्थ हो चली है। देश के कोने-कोने से सामने आते अबोध बच्चियों और महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों के बढ़ते मामले आजादी की बेहद शर्मनाक तस्वीर पेश कर रहे हैं। देश में महंगाई सुरसा की तरह बढ़ रही है, मध्यम वर्ग के लिए जीवनयापन दिनों-दिन मुश्किल होता जा रहा है, आतंकवाद की घटनाएं पग पसार रही हैं, आरक्षण की आग रह-रहकर देश को जलाती रहती है। ऐसे हालात निश्चित तौर पर देश के विकास के मार्ग में बाधक बनते हैं। हर कोई सत्ता के इर्द-गिर्द ही अपनी-अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकता नजर आ रहा है, कहीं कोई सत्ता बचाने में लगा है तो कहीं कोई इसे गिराने के प्रयासों में। संसद और विधानसभाओं में हंगामेदार तस्वीरें तो अब कोई नई बात नहीं रह गई है। ऐसे बदरंग हालातों में रह-रहकर यह सवाल सिर उठाने लगता है कि आखिर कैसी है ये आजादी? आखिर आजादी का अर्थ क्या है? इस सवाल का उत्तर तब तक नहीं दिया जा सकता, जब तक कि यह नहीं जान लिया जाए कि स्वतंत्र होना आखिर किसे कहते हैं? देश को? व्यक्ति को? समाज को? यह जानना भी बेहद जरूरी है कि क्या कुछ बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित व्यक्ति, समाज या देश को स्वतंत्र कहा जा सकता है? क्या भोजन, कपड़ा और रहने की व्यवस्था, बीमारी से बचाव, भय-आतंक, शोषण व असुरक्षा से छुटकारा, साक्षर एवं शिक्षित होने के पर्याप्त अवसर मिलना और अन्य ऐसी ही कई बातें मानव के बुनियादी अधिकार नहीं हैं? क्या शोषण और उत्पीड़न से मुक्ति के संघर्ष को मानव का बुनियादी अधिकार नहीं माना जाना चाहिए? आजादी के बाद सामाजिक और आर्थिक पहलू पर देश में कमजोर तबके का स्तर सुधारने की नीयत से लागू आरक्षण के राजनीतिक रूप ने देश को आज उस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां समूचा राष्ट्र रह-रहकर जातीय संघर्ष के बीच उलझता दिखाई देता है। स्वार्थपूर्ण राजनीति ने माहौल को इस कदर विकृत कर दिया है, जहां से निकल पाना संभव ही नहीं दिखता। राजस्थान हो या उत्तर प्रदेश, हरियाणा हो या गुजरात अथवा महाराष्ट्र, आरक्षण के नाम पर उठते विध्वंसक आन्दोलनों की आग में से जब-तब झुलसते रहे हैं और हर कोई ऐसे विध्वंसक अवसरों का राजनीतिक लाभ लेने की कवायद में ही जुटा नजर आया है। आजादी के बाद के इन साढ़े सात दशकों में महंगाई, भ्रष्टाचार और अपराध इस कदर बढ़ गए हैं कि आम आदमी का जीना दूभर हो गया है। भले ही भ्रष्टाचार पर नकेल कसे जाने के कितने ही ढ़ोल क्यों न पीटे जाते रहें किन्तु वास्तविकता यही है कि आज भी अधिकांश जगहों पर बिना लेन-देन के कार्य सम्पन्न नहीं होते। बड़े नेताओं की तो छोड़ दें, छुटभैया नेताओं की भी चांदी हो चली है। आजादी के बाद लोकतंत्र के इस बदलते स्वरूप ने आजादी की मूल भावना को बुरी तरह तहस-नहस कर डाला है। आजादी का एक शर्मनाक पहलू यह भी है कि गिने-चुने मामलों को छोड़कर हत्या, भ्रष्टाचार, बलात्कार जैसे संगीन अपराधों से विभूषित जनप्रतिनिधि भी प्रायः सम्मानित जिंदगी जीते रहते हैं। देश के ये बदले हालात आजादी के कौनसे स्वरूप को उजागर कर रहे हैं, विचारणीय है। लोकतंत्र के हाशिये पर खड़ी देश की जनता के लिए इस दिशा में फिर से चिंतन-मंथन करना आवश्यक हो गया है कि वह आखिर किस तरह की आजादी की पक्षधर है? आज की आजादी, जहां तन के साथ-साथ मन भी आजाद है, सब कुछ करने के लिए, चाहे वह वतन के लिए अहितकारी ही क्यों न हो, या उस तरह की आजादी, जहां वतन के लिए अहितकारी हर कदम पर बंदिश हो। आज की आजादी, जहां स्वहित राष्ट्रहित से सर्वोपरि होकर देशप्रेम की भावना को लीलता जा रहा है, या वह आजादी, जहां राष्ट्रहित की भावना सर्वोपरि स्वरूप धारण करते हुए देश को आजाद कराने में गुमनाम लाखों शहीदों के मन में उपजे देशप्रेम का जज्बा सभी में फिर से जागृत कर सके। इस तरह के परिवेश पर सभी देशवासियों को आजादी के इस पावन पर्व पर सच्चे मन से मंथन कर सही दिशा में संकल्प लेने की भावना जागृत करनी होगी, तभी आजादी के वास्तविक स्वरूप को परिलक्षित किया जा सकेगा।

(लेखक 32 वर्षों से साहित्य एवं पत्रकारिता में निरन्तर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार तथा कई पुस्तकों के लेखक हैं)

विचार मंथन

इथेनॉल पर आश्रित

लेखक-सिद्धार्थ शंकर

भारत तेल आयात पर अपनी निर्भरता को कम करने के साथ-साथ पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करना चाहता है, इसके लिए वह अगले साल अप्रैल से चुनिंदा पेट्रोल पंपों पर 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग के साथ पेट्रोल की आपूर्ति शुरू करेगा। इसके बाद सरकार धीरे-धीरे आपूर्ति को बढ़ाएगी। भारत ने इस साल जून में निर्धारित समय सीमा से पांच महीने पहले 10 प्रतिशत इथेनॉल के साथ मिश्रित पेट्रोल की आपूर्ति करने का अपना लक्ष्य हासिल कर लिया था। तय समय से पहले 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग के अपने लक्ष्य को हासिल करने के बाद, अब 2025 तक पेट्रोल को 20 प्रतिशत इथेनॉल के साथ मिलाने का लक्ष्य तय किया है। 2025 तक पेट्रोल का पांचवां हिस्सा इथेनॉल से बनाया जाएगा। कुछ मात्रा में अप्रैल 2023 से उपलब्ध होगा और शेष 2025 तक मिल जाएगा। पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनॉल सम्मिश्रण के जरिए, देश 41 हजार 500 करोड़ रुपए से ज्यादा के विदेशी मुद्रा प्रभाव को बचा सकता है, 27 लाख टन के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम कर सकता है और साथ ही किसानों को 40,600 करोड़ रुपए से ज्यादा का भुगतान शीघ्रता से किया जा सकता है। 20 प्रतिशत इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल की आपूर्ति से अनुमानित रूप से सालाना चार अरब डॉलर की बचत होगी। हाल ही में विश्व जैव ईंधन दिवस (वर्ल्ड बायोफ्यूल डे) के मौके पर, प्रधानमंत्री मोदी ने पानीपत में 2जी इथेनॉल प्लांट का लोकार्पण किया था। प्लांट की स्थापना जैव ईंधन के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा वर्षों से उठाए गए कदमों की श्रृंखला का हिस्सा है। इसे इंडियन ऑयल द्वारा 900 करोड़ रुपए से ज्यादा की लागत से बनाया गया है और इसमें सालाना दो लाख टन चावल के भूसे को तीन करोड़ लीटर इथेनॉल में बदलने की क्षमता है। इसके अलावा, यह परियोजना हर साल तीन लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड समकक्ष उत्सर्जन के बराबर ग्रीनहाउस गैसों में कमी लाने में योगदान देगी। इसकी बराबरी देश की सड़कों पर सालाना लगभग 63,000 कारों को हटाने से की जा सकती है। पूरे विश्व में एथेनॉल के इस्तेमाल को प्राथमिकता दी जा रही है। एथेनॉल दोनों मामलों में एमटीबीई की तुलना में सुरक्षित है। एथेनॉल का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल पेट्रोलियम पर निर्भरता कम करने में भी मददगार होगा। इससे ऊर्जा सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलेगा। इथेनॉल और गैसोलीन की की मौजूदा कीमतों एथेनॉल के प्रति लीटर इस्तेमाल से तेल विपणन कंपनियों को 11 रुपए की बचत होती है। इस तरह पेट्रोलियम उद्योग में अंडर-रिकवरी के भार को कम करने में भी इथेनॉल मिश्रण योजना फायदेमंद होगी। भारत में इथेनॉल का उत्पादन शीरे से किया जाता है। एथेनॉल उद्योग को बढ़ावा दिए जाने से शीरा, कृषि उत्पादों और कृषि अपशिष्ट की मांग भी बढ़ेगी। इससे किसानों की आमदनी को अतिरिक्त सहारा मिलेगा। सामान्य चीनी उत्पादन के मौसम में देश में 2.4 अरब लीटर एल्कोहल उत्पादन के लिए मोलासेस की आपूर्ति पर्याप्त होती है। पेट्रोल के साथ 20 प्रतिशत इथेनॉल मिलाकर देश में हर साल एक लाख करोड़ रुपए से अधिक का आर्थिक कारोबार और कीमती विदेशी मुद्रा को बचाने में मदद मिल सकती है। वर्तमान में, देश में पेट्रोल में पांच प्रतिशत इथेनॉल का ब्लेंडिंग किया जाता है। पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल सम्मिश्रण और 5,000 बायोगैस संयंत्र स्थापित करने की योजना है, जिससे हम एक लाख करोड़ रुपए का आर्थिक कारोबार कर सकते हैं। वैसे तो प्रकृति ने हमें सौर ऊर्जा, नाभिकीय ऊर्जा, विद्युत ऊर्जा आदि के रूप में ऊर्जा का अकूत भंडार सौंप रखा है और हम इनका उपयोग भी काफी हद तक करना सीख गए हैं। फिर भी, कई क्षेत्रों, विशेषकर यातायात के क्षेत्र में आज भी हम मुख्य रूप से जीवाश्म-ईंधन यथा कोयला एवं पेट्रोलियम पर ही निर्भर हैं। दुर्भाग्य से न तो इनका वितरण संसार के सभी देशों में एक सार है और न ही हमारे पास इनका असीमित भंडार ही है। जिस रफ़्तार से उनका उपयोग हो रहा है, ये बहुत दिनों तक नहीं चलने वाले है।

सत्ता परिवर्तन

नीतीश की गुगली से बोल्ड हुई भाजपा

लेखक- रमेश सर्राफ धमोरा

बिहार में अचानक हुए सत्ता परिवर्तन से भाजपा सकपका गई है। हालांकि अपनी झेंप मिटाने के लिए भाजपा के नेता कह रहे हैं कि हमें पहले से ही इस बात का आभास था कि नीतीश कुमार हमारा साथ छोड़कर राजद के साथ अपनी सरकार बनाएंगे। इसीलिए हमने उन्हें मनाने का कोई प्रयास नहीं किया। मगर ऐसी बातें कह कर भाजपा के नेता अपने मन को तसल्ली भले ही दे दे। लेकिन अंदर खाने वह नीतीश कुमार की राजनीतिक गूगली से क्लीन बोल्ड हो चुके हैं। नीतीश कुमार ने बिहार की राजनीति में भाजपा को एक बार फिर पांच साल पूर्व वाली स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। जिसकी भाजपा ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। बिहार की राजनीति में एक बात तो साफ हो गई है कि सरकार चाहे किसी भी दल की बने सत्ता की चाबी हमेशा नीतीश कुमार के पास ही रहती है। तभी तो वह आठवीं बार मुख्यमंत्री बनने में सफल हुए हैं। 2020 के विधानसभा चुनाव में भाजपा, जनता दल यूनाईटेड (जदयू) गठबंधन ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ा था। जिसमें बड़ी मुश्किल से दोनों पार्टियों को बहुमत मिल पाया था। उस चुनाव में जहां भाजपा की ताकत में इजाफा हुआ था वही जदयू कमजोर पड़ी थी। भाजपा के विधायक 53 से बढ़कर 74 हो गए थे। वही जदयू के विधायक 71 से घटकर 43 पर आ गए थे। हालांकि बिहार में तीसरे नंबर की पार्टी होने के उपरांत भी भाजपा ने नीतीश कुमार को ही मुख्यमंत्री बनाया था। मगर उनके साथ अपने दो- दो उपमुख्यमंत्री बना दिए थे। इसके अलावा विधानसभा अध्यक्ष के पद के साथ ही मंत्रिमंडल में भी भाजपा ने अपनी हिस्सेदारी अधिक रखी थी। अपनी मर्जी के हिसाब से काम करने वाले नीतीश कुमार को उस वक्त मजबूरी में भाजपा की शर्तें माननी पड़ी थी। लेकिन मन ही मन वह भाजपा के व्यवहार से संतुष्ट नहीं थे। 2020 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार की हार का सबसे बड़ा कारण बिहार के दिग्गज नेता रहे रामविलास पासवान के पुत्र चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी द्वारा चुनाव लड़ना रहा था। उस वक्त चिराग पासवान की पार्टी ने भाजपा के सामने कहीं भी अपने प्रत्याशी नहीं उतारे। जबकि जनता दल यू के प्रत्याशियों के सामने हर सीट पर चुनाव लड़ा था। जिससे वोट कटने से नीतीश कुमार को नुकसान हुआ और उनके कई प्रत्याशी चुनाव हार गए। एनडीए गठबंधन में साथ होने के उपरांत भी चिराग पासवान द्वारा नीतीश कुमार के खिलाफ चुनाव लड़ने को नीतीश कुमार भाजपा की कारस्तानी ही मानते थे।

कई अवसरों पर नीतीश कुमार ने अपनी बात का इजहार करते हुए कहा भी था कि यदि भाजपा के बड़े नेता चाहते तो पासवान चुनाव मैदान में हट सकता था। मगर भाजपा के बड़े नेता उन्हें कमजोर करने के लिए ही पासवान को सह देते रहे थे। इसी के चलते चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी ने 134 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़कर मात्र एक बेगूसराय जिले की मतीहानी सीट मात्र 303 वोटों से जनता दल यू प्रत्याशी को हराकर जीत पाई थीं। लेकिन लोजपा 23 लाख 82 हजार 739 यानी 5.59 प्रतिशत वोट ले गई। जिसका सीधा नुकसान जेडीयू को उठाना पड़ा था। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा ने जहां 110 सीटों पर चुनाव लड़ कर 82 लाख 2 हजार 67 वोट यानी 19.46 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे। वहीं नीतीश कुमार की जदयू ने 115 सीटों पर चुनाव लड़ कर महज 64 लाख 50 हजार 179 यानी 15.39 प्रतिशत मत ही प्राप्त कर पाई थी। वहीं राष्ट्रीय जनता दल ने 144 सीटों पर चुनाव लड़ कर 75 सीटों के साथ 97 लाख 38 हजार 855 वोट यानी 23.11 प्रतिशत मत प्राप्त किया था। आरजेडी के साथ महागठबंधन में शामिल कांग्रेस 70 सीटों पर चुनाव लड़कर महज 19 सीटें ही जीत सकी थी। कांग्रेस को 39 लाख 95 हजार 319 यानी 9.48 प्रतिशत मत मिले थे। नीतीश कुमार का मानना था कि भाजपा अंदर ही अंदर उनकी पार्टी को कमजोर करके उनके वोट बैंक पर अपना प्रभाव जमा रही है।

स्वतंत्रता दिवस हर भारतीय के लिए बहुत खास है यह दिन

ब्रितानी हुकूमत के खिलाफ एक लंबी लड़ाई, हजारों कुर्बानियां और तमाम जुल्मों-सितम के बाद हिंदुस्तान 15 अगस्त 1947 की आधी रात को अंग्रेजों से मुक्त हो गया था। एक लंबे समय से गुलामी की बेड़ियों में जकड़े भारतीय समाज को खुली हवा में सांस लेने का मौका मिला तो हर ओर बस जश्न का माहौल था। हर कोई आजादी के मतवालों को याद कर रहा था, जिनके बलिदान से भारतीयों को मुक्ति मिली थी। इस दिन से भारत का स्वतंत्रता दिवस मनाया जाने लगा।

भारत आज स्वतंत्रता दिवस की 73वीं वर्षगाठ मनाने जा रहा है। देश के लिए इस बार स्वतंत्रता दिवस कई मायने में खास है। एक ओर जम्मू-कश्मीर से आटिकल-370 हटाकर उसे दो हिस्सों में बांटकर जम्मू और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया है। इस बार भी देश की जनता को प्रधानमंत्री से काफी उम्मीदें हैं। पीएम मोदी इस बार अपने दूसरे कार्यकाल में लाल किले से तिरंगा फहराएंगे। आजादी के 72 साल पूरे होने पर हर साल की तरह इस बार भी राष्ट्रीय पर्व पर तरह-तरह के कार्यक्रम किए जाएंगे। इस खास पर्व के मौके पर क्या बड़े बुजुर्ग, युवा, बच्चों से लेकर महिलाएं सभी स्वतंत्रता दिवस और जश्न ए आजादी के उल्लास में डूबे नजर आएंगे। हर तरफ आजादी का जश्न दिखाई देगा।

आजादी से लेकर आज तक लगभग सात दशक बीत चुके हैं। इन इकहत्तर सालों में भारत ने अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। एक समय जो देश सोने की चिड़िया कहलाता था, उस पर मुगलों से लेकर अंग्रेजों तक ने बहुत जुल्म ढहाए, जिससे देश का आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक ताना बाना बिल्कुल ढहने की कगार पर पंहुच गया। 1947 में 14 अगस्त की रात जब 15 अगस्त में परिवर्तित हुई तो ब्रितानी हुकूमत का परचम नीचे गिरा भारत का तिरंगा शान से लहराने लगा। उस समय देश का नेतृत्व करने वाले लोगों के सामने देश के विकास की बड़ी चुनौती थी और साधन बहुत कम। जैसे-तैसे इन सात दशकों में देश ने अपने आप को संभाला है और आज विश्व में अपना अलग मुकाम भी स्थापित किया है।

इन स्मारकों का आजादी से है घनिष्ठ रिश्ता

जैसा कि सभी जानते हैं कई स्वतंत्रता सेनानी देश को आजाद कराने में शहीद हो गए। जब हम इस स्वतंत्रता दिवस पर इन शहीदों को नमन करेंगे तो इनके स्मारक जरूर याद आएंगे। हम बताते हैं कि देश में किन-किन स्थानों का हमारी आजादी से करीब का रिश्ता है। आप शहीदों को नमन करने के लिए इन स्थानों पर जा भी सकते हैं।

लाल किला, दिल्ली

हर साल स्वतंत्रता दिवस के मौके पर भारत के प्रधानमंत्री लाल किले पर झंडा फहराते हैं और देश को संबोधित करते हैं। सन 1947 में जब भारत को आजादी मिली थी, उस दिन देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले से भाषण दिया था। लाल किला अंग्रजों से भारत की आजादी का प्रतीक है। ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण लाल किले का निर्माण शाहजहां ने करवाया था। लाल रंग के बलूआ पत्थर से बने होने के कारण इसका नाम लाल किला पड़ा।

जलियांवाला बाग, अमृतसर

सन् 1919 में जलियांवाला बाग में बैसाखी के दिन स्वतंत्रता सेनानियों ने रॉलेट ऐक्ट में विरोध में एक बैठक की योजना बनाई। इसके बाद जब लोग यहां आए तो बिना किसी चेतावनी के जनरल डायर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। जालियांवाला बाग हत्याकांड में कई सौ लोग शहीद हुए थे। इन शहीद की याद में जलियांवाला बाग में मेमोरियल बनाया गया है। यहां पर दीवारों में बुलेट का निशान देखे जा सकते हैं। इन निशानों को देखकर आप अत्याचार का अंदाजा लगा सकते हैं।

वाघा बॉर्डर, अमृतसर

पंजाब की वाघा बॉर्डर जो भारत और पाकिस्तान को अलग करती है। रोजाना सुर्यास्त से पहले वाघा बॉर्डर पर रीट्रीट सेरेमनी होती है। इस सेरेमनी में भारत और पाकिस्तान के जवान शामिल होते हैं। इसको देखने के लिए दोनों के तरफ काफी संख्या में पर्यटक आते हैं।

सेलुलर जेल, अंडमान निकोबार द्वीप

अंडमान निकोबार द्वीप समूह में स्थित सेलुलर जेल को काला पानी के रूप में भी जाना जाता है। यह जेल अब एक म्यूजियम और स्मारक बन गई है। सेलुलर जेल में बने म्यूजियम और स्मारक में आने पर आपको अंदाजा होगा कि स्वतंत्रता सेनानियों को हमारे देश को आजाद कराने के लिए कितनी यातना सहनी पड़ी।

अगस्त क्रांति मैदान, मुंबई

मुंबई का अगस्त क्रांति मैदान में गांधीजी ने 9 अगस्त 1942 को अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो का बिगुल फूंका था। यह स्थान भारतीय स्वतंत्रता में सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से है। आज इस मैदान को गोवली मैदान कहा जाता है। आप स्वतंत्रता दिवस पर इस मैदान को देखने जा सकते हैं।

साबरमती आश्रम, अहमदाबाद

साबरमती आश्रम से महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह और दांडी मार्च की शुरुआत की थी। साबरती से लेकर दांडी तक के जिस रास्ते से यह जुलूस निकला था, वो अब ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हो गया है। महात्मा गांधी ने वर्ष 1930 में दांडी मार्च शुरू किया तो वे इस आश्रम रुके थे।

चंद्रशेखर आजाद पार्क, प्रयागराज

सन् 1931 में चंद्रशेखर आजाद प्रयागराज के इस पार्क में ब्रिटिश सैनिकों के साथ लड़े थे। इस पार्क में उन्होंने मात्र 25 साल की उम्र में अपने प्राणों को न्यौछावर किया था। बता दें कि जब चंद्रशेखर आजाद ने ब्रिटिश पुलिस ने घेर लिया। तब उन्होंने सोचा कि ब्रिटिश सैनिकों की गोली से नहीं मरेंगे और उन्होंने खुद को इस जगह पर गोली मार ली। इस जगह को अब चंद्रशेखर आजाद पार्क के नाम से जाना जाता है। पार्क में चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा लगी हुई है।

झांसी का किला उत्तर प्रदेश

सभी जानते हैं कि झांसी की रानी लक्ष्मी बाई बहुत साहसी योद्धा हुई हैं, जिन्होंने सिर्फ अपने दम पर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। झांसी में एक किला बना हुआ है, जहां आप स्वतंत्रता दिवस पर जा सकते हैं। 17वीं शताब्दी में झांसी का किला राजा बीर सिंह देव ने बनवाया था। ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लक्ष्मी बाई अपने बेटे को पीठ पर बांधकर वीरता से लड़ीं थीं।

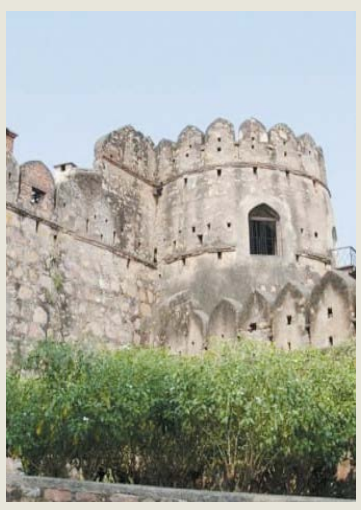

विशेष नारे, जिन्होंने आजादी में दिया अहम योगदान

भारत माता के वीर सपूतों के जज्बे की वजह से हमें 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिली। इन सपूतों में और पूरे देश में देशभक्ति और जोश की भावना को भरने के लिए समय-समय पर स्वतंत्रता सेनानियों ने नए-नए नारों को गढ़ा और लोगों को उद्वेलित किया। इन नारों ने देशभक्ति की अलख को जगाए रखा। एक नजर ऐसे ही नारों पर-

- **जय हिंद (नेताजी सुभाष चंद्र बोस)**
- **जय जवान, जय किसान (लाल बहादुर शास्त्री)**
- **वंदे मातरम (बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय)**
- **स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूंगा (बाल गंगाधर तिलक)**
- **सत्यमेव जयते(पंडित मदनमोहन मालवीय)**
- **इंकलाब जिंदाबाद (भगत सिंह)**
- **सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है (रामप्रसाद बिस्मिल)**
- **आराम हराम है (जवाहर लाल नेहरू)**
- **दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे (चंद्र शेखर आजाद)**
- **तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा (नेताजी सुभाष चंद्र बोस)**

आजादी से जुड़े रोचक किस्से जिन्हें जानना भी जरूरी

आजादी के बाद पिछले 72 सालों में भारत ने कितनी तरक्की की इसे लेकर तमाम तरह की चर्चाएं होंगी। इन सभी चर्चाओं से पहले हमें उस दिन के बारे में जानना बेहद जरूरी है। जब हमें 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली थी। उस दिन कई ऐसी घटनाएं हुई थी, जिनके बारे में आज तक कम ही लोग जानते है, आज हम आपको उस दिन की कुछ ऐसी ही बातें बताने जा रहे हैं-

-15 अगस्त 1947, जिस दिन हमारे भारत देश को आजादी मिली, तब इस दिन के जश्न में महात्मा गांधी शामिल नहीं हो सके थे, क्योंकि तब वे दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बंगाल के नोआखली में थे, जहां वे हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच हो रही सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए अनशन कर रहे थे।

-जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने महात्मा गांधी को खत भेजा। इसमें लिखा था, कि 15 अगस्त हमारा पहला स्वाधीनता दिवस होगा। आप राष्ट्रपिता हैं। इसमें शामिल हो अपना आशीर्वाद दें।

- गांधी ने इस खत का जवाब भिजवाया, जब कलकत्ते में हिंदु-मुस्लिम एक दूसरे की जान ले रहे हैं, ऐसे में मैं जश्न मनाने के लिए कैसे आ सकता हूं। मैं दंगा रोकने के लिए अपनी जान दे दूंगा।

- 14 अगस्त की मध्यरात्रि को जवाहर लाल नेहरू ने अपना ऐतिहासिक भाषण ट्रिस्ट विद डेस्टनी दिया था। इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना था, लेकिन महात्मा गांधी ने इसे नहीं सुना, क्योंकि उस दिन वे जल्दी सोने चले गए थे।

- हर साल स्वतंत्रता दिवस पर भारत के प्रधानमंत्री लाल किले से झंडा फहराते हैं, लेकिन 15 अगस्त, 1947 को ऐसा नहीं हुआ था। लोकसभा सचिवालय के एक शोध पत्र के मुताबिक नेहरू ने 16 अगस्त, 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था।

- 15 अगस्त तक भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा रेखा का निर्धारण नहीं हुआ था। इसका फैसला 17 अगस्त को रेडक्लिफ लाइन की घोषणा से हुआ।

-15 अगस्त के दिन की शुरुआत सुबह 8.30 बजे हुई, जब वायसरीगल लॉज (जिसे अब राष्ट्रपति भवन के नाम से जाना जाता है) में शपथग्रहण समारोह हुआ। नई सरकार ने सेंट्रल हॉल (आज जिसे दरबार हॉल कहा जाता है) में शपथ ली।

हिमाचल के इस शहर में 15 नहीं 16 अगस्त को मनाया जाता है आजादी का जश्न

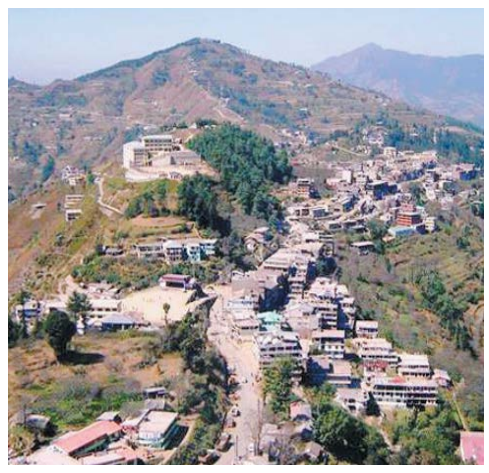

हिमाचल प्रदेश का एक स्थान ऐसा है, जो आजादी का जश्न 15 अगस्त को न मनाकर 16 अगस्त को मनाता है। इस जगह का नाम है ठियोग, जो कि शिमला से तीस किलोमीटर दूर स्थित है। इसके पीछे कारण यह है कि ठियोग रियासत हिंदुस्तान में सबसे पहले राजाओं की सत्ता से आजाद हुई और जनता की चुनी हुई पहली सरकार यहां 16 अगस्त, 1947 को बनी। तब से लेकर प्रशासन 16 अगस्त को यहां सरकारी तौर पर कार्यक्रम आयोजित करता है।

ठियोग से शुरू हुआ था प्रजामंडल आंदोलन: इतिहास बताता है कि 15 अगस्त, 1947 को ठियोग रियासत के राजा कर्मचंद के बासा महल के बाहर लोगों की भीड़ जुट गई, उन्हें विरोध को देखते हुए अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी। इसके चलते ही अगले दिन लोकतंत्र की बहाली के तहत सूरत राम प्रकाश ने सत्ता संभाली। उनके साथ बुद्धिराम, सीताराम वर्मा एवं आठ अन्य ने मंत्री पद की शपथ ली। याद रहे कि 15 व 16 अगस्त को ठियोग से प्रजामंडल आंदोलन शुरू हुआ था। इसके बाद ही लोकतंत्र की स्थापना हुई एवं सूरत राम को ठियोग का प्रधानमंत्री बनाया गया था।

भारत की तरह ये चार देश भी 15 अगस्त को ही मनाते हैं आजादी का जश्न

15 अगस्त यानी वह दिन जब हमारे देश को आजादी मिली थी। 15 अगस्त का दिन भारत के लिए तो महत्वपूर्ण है, ये तो सभी जानते हैं लेकिन भारत के अलावा भी चार और ऐसे देश हैं, जहां इस दिन आजादी का जश्न मनाया जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि इसी दिन वे भी स्वतंत्र हुए थे और इन देशों में भी 15 अगस्त को ही स्वतंत्रता दिवस आता है। यहां हम आपको ऐसे ही देशों के बारे में बताने जा रहे हैं -

कांगो : कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य अफ्रीका महाद्वीप के मध्य में स्थित देश है, जिसका कुछ भू-भाग अंध महासागर से मिलता है। क्षेत्रफल के अनुसार यह विश्व का 11वां सबसे बड़ा देश है और फ्रांसीसी भाषा बोलने वाला सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। 15 अगस्त, 1960 को कांगो फ्रांस से आजाद हुआ। ये देश 80 साल तक फ्रेंच के शासन के तहत रहा।

बहरीन: बहरीन की राजधानी मनामा है। ये अरब जगत का एक हिस्सा है, जो एक द्वीप पर बसा हुआ है। 1985 में नेशनल असेंबली भंग हुई, जो अब तक बहाल नहीं हो पाई है। 1990 में कुवैत पर इराक के आक्रमण के बाद बहरीन संयुक्त राष्ट्रसंघ का सदस्य बना। बहरीन को 15 अगस्त, 1971 को ब्रिटेन से आजादी मिली।

उत्तर और दक्षिण कोरिया : उत्तर और दक्षिण कोरिया को 15 अगस्त, 1945 में जापान से आजादी मिली थी। कोरिया 1948 तक संयुक्त था। उस समय इसे दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया में विभाजित कर दिया गया। साल 1910 से लेकर साल 1945 तक कोरियाई प्रायद्वीप जापान के कब्जे में रहा। साउथ कोरिया 15 अगस्त 1945 को जापान से आजाद हुआ।

..तो 15 अगस्त नहीं इस दिन आजाद होता भारत

15 अगस्त भारतीयों के जेहन में बसी एक ऐसी तारीख है, जिसकी तुलना 26 जनवरी छोड़कर शायद ही किसी और दिन से की जा सके, लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत को आजादी मिलने के लिए किसी और तारीख पर सहमति बनी थी, लेकिन अंग्रेजों ने अपनी चाल को सफल बनाने के लिए इसे बदलवा दिया।

असल में साल 1930 से ही कांग्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए 26 जनवरी के दिन का चयन कर चुकी थी। हालांकि इंडिया इंडिपेंडेंस बिल के मुताबिक ब्रिटिश प्रशासन ने सत्ता हस्तांतरण के लिए 3 जून 1948 की तारीख तय की गई थी। फरवरी 1947 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमेंट रिचर्ड एटली ने घोषणा की थी कि सरकार 3 जून 1948 से भारत को पूर्ण आत्म प्रशासन का अधिकार प्रदान कर देगी। हालांकि माउंटबेटन के परिदृश्य में आने के बाद सब कुछ बदल गया। फरवरी 1947 में ही लुई माउंटबेटन को भारत का आखिरी वायसराय नियुक्त किया गया था। माउंटबेटन पहले पड़ोसी देश बर्मा के गवर्नर हुआ करते थे। उन्हें ही व्यवस्थित तरीके से भारत को सत्ता हस्तांतरित करने की जिम्मेदारी भी दी गई थी।

जिन्ना के मरने के डर से हुआ सब: असल में जिन्ना ही वह चेहरा थे, जिनको आगे रखकर ब्रिटिशों ने भारत को दो टुकड़ों में बांटने की साजिश रची थी और देश में ब्रिटिशों ने ऐसा हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण किया, जिसकी आग सदियों तक नहीं मिटने वाली थी। अगर जिन्ना की मृत्यु ब्रिटिशों के प्लान के पूरा होने से पहले हो जाती तो उन्हें मुश्किल आ सकती थी। बता दें कि 15 अगस्त ब्रिटिशों के लिए शुभ दिन था, क्योंकि इसी दिन ब्रिटेन और मित्र राष्ट्रों ने जापान को आत्म समर्पण करवाकर द्वितीय विश्वयुद्ध जीता था, इसलिए इस दिन भारत को भी सत्ता हस्तांतरित करने का निर्णय लिया गया।

माउंटबेटन ने क्या किया

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि माउंटबेटन ब्रिटेन के लिए 15 अगस्त की तारीख को शुभ मानता था, क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के वक्त जब 15 अगस्त 1945 को जापानी सेना ने आत्मसमर्पण किया था, तब माउंटबेटन अलाइड फोर्सेज का कमांडर हुआ करता था। इसलिए माउंटबेटन ने ब्रिटिश प्रशासन से बात करके भारत को सत्ता हस्तांतरित करने की तिथि 3 जून 1948 से 15 अगस्त 1947 कर दी। हालांकि एक दूसरे इतिहासकार धड़े का तर्क ज्यादा पुष्ट मालूम पड़ता है। भारत को 3 जून 1948 के बजाय 15 अगस्त 1947 को ही सत्ता हस्तांतरित करने को लेकर एक और कारण यह भी बताया जाता है कि ब्रिटिशों को इस बात की भनक लग गई थी कि मोहम्मद अली जिन्ना जिनको कैंसर था और वो ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहेंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों को चिंता थी कि अगर जिन्ना नहीं रहे तो महात्मा गांधी अलग देश न बनाने के प्रस्ताव पर मुसलमानों को मना लेंगे।

आकाश एयर की पहली उड़ान के उद्घाटन के मौके पर सार्वजनिक रूप से दिखाई दिए थे झुनझुनवाला

नई दिल्ली । दिग्गज शेयर कारोबारी राकेश झुनझुनवाला को सात अगस्त को मुंबई-अहमदाबाद के बीच आकाशा एयर की उद्घाटन उड़ान के मौके पर आखिरी बार सार्वजनिक रूप से देखा गया था। राकाश झुनझुनवाला आकाश एयर के प्रवर्तन हैं और उनके पास विमानन क्षेत्र की इस कंपनी में 40 प्रतिशत हिस्सेदारी है। झुनझुनवाला का रविवार सुबह निधन हो गया है। उन्होंने मुंबई एयरपोर्ट पर अपने भाषण में कहा था कि आमतौर पर एक बच्चा नौ महीने में जन्म लेता है, लेकिन हमने आकाश एयर को 12 महीने में तैयार किया। नागर विमानन मंत्रालय के सहयोग के बिना यह संभव नहीं था। उन्होंने कहा था कि मुझे नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि लोगों का मानना है कि भारत की नौकरशाही काफी खराब है। उन्होंने कहा नागर विमानन मंत्रालय ने हमें जो सहयोग दिया वह अविश्वसनीय है। भाषण देने के बाद झुनझुनवाला ने आकाश एयर की पहली उड़ान में यात्रा भी की थी। आकाश एयर के संस्थापक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) विनय दुबे ने झुनझुनवाला के निधन पर शोक जताते हुए कहा है कि आकाश एयर में हम उनका ठीक से आभार भी नहीं जता पाए थे। किफायती विमानन सेवा कंपनी आकाश एयर फिलहाल मुंबई-अहमदाबाद और बेंगलुरु-कोच्चि मार्गों पर उड़ानों का परिचालन कर रही है। 19 अगस्त से यह बेंगलुरु-मुंबई और 15 सितंबर से चेन्नई-मुंबई मार्ग पर उड़ानें शुरू करेगी।

करुड़ वैश्य बैंक ने भी की एफडी पर ब्याज की दरों में बढ़ोतरी

नई दिल्ली । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ओर से रेपो रेट में बढ़ोतरी के बाद बैंकों ने भी ब्याज दरों में इजाफा शुरू कर दिया है। लोन पर ब्याज दर बढ़ने के अलावा बैंक जमा पर भी ब्याज दरों में इजाफा होने लगा है। इस बीच प्राइवेट सेक्टर के करुड़ वैश्य बैंक यानी केवीबी ने फिक्स्ड डिपॉजिट यानी एफडी पर मिलने वाले ब्याज की दरों में बढ़ोतरी की है। बैंक की आधिकारिक वेबसाइट के मुताबिक, करुड़ वैश्य बैंक की नई दरें 16 अगस्त, 2022 से प्रभावी होगी। बैंक ने 2 करोड़ से कम के एफडी पर ब्याज दरों में इजाफा किया है। बैंक अब 7 दिनों से लेकर 6 साल से ऊपर में मैच्योर होने वाली एफडी पर आम जनता के लिए 4.00 फीसदी से 6.00 फीसदी तक की ब्याज दर की पेशकश कर रहा है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए 6.25 फीसदी से 6.50 फीसदी तक की ब्याज दर की पेशकश कर रहा है। 7 दिनों से 45 दिनों में मैच्योर होने वाली एफडी पर बैंक ने ब्याज दर 3.25 फीसदी से बढ़ाकर 4.00 फीसदी और 46 दिनों से 90 दिनों में मैच्योर होने वाली एफडी पर बैंक ने ब्याज दर 3।50त्न से बढ़ाकर 4.25 फीसदी कर दिया है। 91 दिनों से 120 दिनों में मैच्योर होने वाली एफडी पर अब ग्राहकों को 4.50 फीसदी की ब्याज दर मिलेगी जो पहले 3.75 फीसदी थी। अब 121 दिनों से 180 दिनों में मैच्योर होने वाली एफडी पर 4।50 फीसदी की ब्याज दर दी जाएगी जो पहले थी 4 फीसदी थी। 181 दिनों में 270 दिनों तक की एफडी पर करूर वैश्य बैंक अब 5.00 फीसदी की ब्याज दर की पेशकश करेगा। 271 दिन से लेकर लेकिन 1 साल से कम की एफडी पर बैंक ने ब्याज दर 5 फीसदी से बढ़ाकर 5.25त्न कर दी है। गौरतलब है कि हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने रेपो रेट को 0.5 फीसदी बढ़ाकर 5.4 फीसदी कर दिया। रेपो रेट 3 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है।

बैंक ऑफ इंडिया को इस साल ऋण कारोबार में 10-12 प्रतिशत वृद्धि की उम्मीद

नई दिल्ली ।

बैंक ऑफ इंडिया (बीओआई) को चालू वित्त वर्ष (2022-23) में कॉरपोरेट ऋण की मांग में वृद्धि से कुल कर्ज या अग्रिम में 10-12 प्रतिशत वृद्धि की उम्मीद है। बैंक के एक शीर्ष अधिकारी ने यह बात कही। बैंक की मौजूदा साल में अबतक ऋण वृद्धि पांच प्रतिशत रही है। मुख्य रूप से में खुदरा क्षेत्र, कृषि और सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्योग ऋण (आरएएम) क्षेत्रों में मांग से बैंक का अग्रिम बढ़ा है। बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) ए के दास ने कहा पूरे साल में ऋण वृद्धि 10 से 12 प्रतिशत के बीच रहेगी। इस साल अभी जून तक हमारी वृद्धि लगभग पांच प्रतिशत रही है। दास ने कहा, जून, 2022 के अंत में बैंक का कुल अग्रिम (वैश्विक और घरेलू) 4,77,746 करोड़ रुपए था। बीओआई का चालू वित्त वर्ष के जून में समाप्त पहली तिमाही में शुद्ध लाभ 22 प्रतिशत की घटकर 561 करोड़ रुपये पर आ गया। एक साल पहले की इसी तिमाही में बैंक ने 720 करोड़ रुपए मुनाफा कमाया था। बैंक की जून, 2022 के अंत तक सकल गैर-निष्पादित अस्तियां (एनपीए) घटकर 9.30 प्रतिशत या 44,415 करोड़ रुपये रह गई। जून, 2021 के अंत तक यह 13.51 प्रतिशत या 56,042 करोड़ रुपये रही थी। इसी तरह, शुद्ध एनपीए भी घटकर 2.21 प्रतिशत यानी 9,775 करोड़ रुपये पर आ गया। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में यह 3.35 प्रतिशत यानी 12,424 करोड़ रुपये) रहा था।

वाणिज्य मंत्रालय विशेष आर्थिक क्षेत्र के पुनर्गठन का कर रहा प्रयास, नया कानून लाने की तैयारी

नई दिल्ली । देश का वाणिज्य मंत्रालय एक नए कानून के द्वारा विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) के पुनर्गठन का प्रयास कर रहा है। एक अधिकारी ने यह जानकारी देते हुए कहा कि मंत्रालय विशेष आर्थिक क्षेत्र को फिर खड़ा करने के लिए कई प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रोत्साहनों मसलन आयात शुल्क को स्थगित करना और निर्यात करों से छूट का प्रस्ताव कर रहा है। इस साल के आम बजट में सरकार ने विशेष आर्थिक क्षेत्रों का संचालन करने वाले मौजूदा कानून को एक नए कानून के साथ बदलने का प्रस्ताव रखा था ताकि राज्यों को 'उद्यम और सेवा केंद्रों के विकास' (देश) में भागीदार बनाया जा सके। अधिकारी ने कहा कि वाणिज्य मंत्रालय ने नए विधेयक पर वित्त समेत विभिन्न मंत्रालयों से राय मांगी है। विभिन्न मंत्रालयों के विचार मिलने के बाद मंत्रालय इसपर केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी लेगा और फिर संसद में नया विधेयक लाया जाएगा। इन प्रस्तावों में एसईजेड की किसी इकाई द्वारा घरेलू खरीद पर एकीकृत माल एवं सेवा कर (आईजीएसटी) की शून्य रेटिंग का प्रोत्साहन शामिल है। इसके अलावा इन क्षेत्रों के डेवलपर के लिए अप्रत्यक्ष लाभ कर को जारी रखने का भी प्रस्ताव है।

इन्फोसिस अविश्वनीय संगठन, आगे भी जारी रहेगा विकास का सिलसिला : सलिल पारेख

नई दिल्ली ।

सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी इन्फोसिस के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सलिल पारेख ने एक अविश्वनीय संगठन बनाने के लिए कंपनी के संस्थापकों की सराहना कि है। उन्होंने भरोसा जताया कि हमेशा मजबूती से खड़ी रहने वाली फर्म इस स्थिरता को आगे भी कायम रखने में सफल रहेगी। छ साल पहले इन्फोसिस के संस्थापकों और तत्कालीन प्रबंधन के बीच पैदा हुए विवाद के बाद कमान संभालने वाले पारेख ने कंपनी को स्थिरता की ओर ले जाने में बड़ी भूमिका निभाई है। उनका मानना है कि इन्फोसिस प्रौद्योगिकी की अगुवाई में पैदा होने वाले वृद्धि अवसरों का लाभ उठाने के लिए अगले कई साल तक बेहतर स्थिति में बनी रहेगी। कामकाज के संचालन के मुद्दों पर एन आर नारायणमूर्ति सहित बोर्ड और संस्थापकों में विवाद के बीच जनवरी, 2018 में पारेख ने इन्फोसिस की कमान संभाली थी। इस विवाद की वजह से तत्कालीन सीईओ विशाल सिक्का को इन्फोसिस से बाहर जाना पड़ा था। यह पूछे जाने पर कि क्या इन्फोसिस ने मुश्किलों के उस दौर को पीछे छोड़ दिया है, पारेख ने कहा हम एक अच्छी और टिकाऊ स्थिति में हैं। मुझे लगता है कि कंपनी हमेशा मजबूत रही है। उन्होंने कहा हमने देखा है कि संस्थापकों ने एक अविश्वसनीय संगठन बनाया है। और इसलिए कंपनी हमेशा एक अच्छी स्थिति में रही है। हम इस स्थिरता को जारी रखने की उम्मीद करते हैं। कंपनी ने हाल में मजबूत मांग और बेहतर आपूर्ति का हवाला देते हुए वित्त वर्ष 2022-23 के लिए अपने राजस्व वृद्धि के अनुमान को बढ़ाकर 14-16 प्रतिशत कर बाजार को चौंका दिया है। पिछले पांच साल में कंपनी की एकीकृत आय काफी तेजी से बढ़ी है।

कम वर्षा से उत्पादन गिरने की उम्मीद, चावल के निर्यात पर लगाई जा सकती है रोक

नई दिल्ली ।

देश के कई इलाकों में इस साल कम बारिश हुई है। इस वजह से इस साल चावल का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। इसके बाद यह संभावना बढ़ गई है कि भारत में अब खाद्य सुरक्षा के लिए गेहूं और चीनी के बाद चावल के निर्यात को भी प्रतिबंधित किया जा सकता है। कृषि मंत्रालय के अनुसार दुनिया के दूसरे सबसे बड़े चावल उत्पादक दक्षिण एशियाई देश में चावल का कुल रकबा इस सीजन में अब तक 12 फीसदी गिर गया है। फसल ऐसे समय में कम हो रही है, जब बड़े पैमाने पर खाद्य मुद्रास्फीति दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं को नुकसान पहुंचा रही है। भारत का वैश्विक चावल व्यापार का लगभग 40त्न हिस्सा है। इससे व्यापारियों में चिंता बढ़ गई है कि अगर चावल के उत्पादन में गिरावट आई तो, संभावना है कि सरकार इसके निर्यात पर रोक लगा सकती है। भारत ने मई में गेहूं के शिपमेंट पर यह कहते हुए प्रतिबंध लगा दिया था कि देश की खाद्य सुरक्षा खतरे में है, क्योंकि कई राज्यों में रिकॉर्ड-टूटने वाली गर्मी की वजह से गेहूं की पैदावार कम हुई थी। भारत ने अपनी खाद्य आपूर्ति की सुरक्षा के लिए चीनी निर्यात पर भी रोक लगा दी थी।

कृषि मंत्रालय ने शुक्रवार देर रात कहा कि धान का रकबा 12 अगस्त तक गिरकर 30.98 मिलियन हेक्टेयर (76.55 मिलियन एकड़) रह गया है, जो एक साल पहले 35.36 मिलियन हेक्टेयर था। हालांकि, गन्ने के लिए आवंटित क्षेत्र 5.45 मिलियन से बढ़कर 5.52 मिलियन हेक्टेयर हो गया है। भारत में मानसून की बारिश अब तक औसत से 8त्न ज्यादा रही है, लेकिन उत्तरी राज्य उत्तर प्रदेश जैसे कुछ प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों में इनकी कमी रही है। मानसून के मौसम के लिए बुवाई आम तौर पर मई के अंत में शुरू होती है और जुलाई में सबसे ज्यादा होती है। कटाई सितंबर के आखिर में शुरू होती है। वाणिज्य मंत्रालय के तहत आने वाले डायरेक्टरेट जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड यानी डीजीएफटी ने 13 मई 2022 को गेहूं के निर्यात पर रोक लगाने का फैसला किया था। हालांकि गेहूं निर्यात पर पाबंदियां लगने के बाद भी भारत जरूरतमंद देशों को इनकी आपूर्ति कर रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध की वजह से वैश्विक बाजारों में गेहूं की आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित हुई है। दोनों ही देश गेहूं के बड़े उत्पादकों में हैं। वैश्विक स्तर पर गेहूं की आपूर्ति में रूस-यूक्रेन का हिस्सा करीब 25 फीसदी का है।

नियमित रूप से अपनी कमाई का 25 फीसदी दान करते थे झुनझुनवाला

मुंबई ।

देश के प्रख्यात निवेशक और उद्यमी राकेश झुनझुनवाला का रविवार सुबह 62 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है। झुनझुनवाला कई स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित थे और कुछ सप्ताह पहले उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी। राकेश झुनझुनवाला की कुल नेटवर्थ लगभग करीब 46 हजार करोड़ रुपए थी। वह अपनी कमाई का 25 फीसदी हिस्सा चैरिटी के लिए देते थे। राकेश झुनझुनवाला के स्टॉक पोर्टफोलियो की बारे में तो सभी जानते हैं, लेकिन उनका चैरिटी पोर्टफोलियो काफी बड़ा था। वे स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए काफी धन दान में देते थे। झुनझुनवाला अपनी कमाई का 25 फीसदी दान देते थे। वे सेंट जूड में भी योगदान देते है। ये संस्था कैंसर से पीड़ित बच्चों के लिए काम करती है। झुनझुनवाला अगस्त्य इंटरनेशनल फाउंडेशन और अर्पण संस्था को भी दान देते थे। वे अशोक यूनिवर्सिटी, फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल्स सोसाइटी और ओलंपिक गोल्ड क्वेस्ट का भी समर्थन करते हैं। वे नवी मुंबई में एक आखों का हॉस्पिटल बनाने जा रहे थे, जिसमें हर साल 15,000 फ्री सर्जरी हो सकेगी। राकेश झुनझुनवाला जब कॉलेज में थे तभी 1985 में स्टॉक मार्केट में निवेश करना शुरू कर दिया था। उस समय बीएसई सेन्सेक्स 150 अंक के आस-पास था और झुनझुनवाला ने महज 5,000 रुपए के साथ निवेश की शुरुआत की थी। हालांकि, ये रकम भी उस समय में काफी ज्यादा थी।

राकेश झुनझुनवाला की कुल नेटवर्थ इस समय लगभग 39 करोड़ रुपए के आस-पास थी। राकेश झुनझुनवाला को कई निवेशक अपने गुरु के रूप में देखते हैं लेकिन झुनझुनवाला भी किसी को अपना गुरु मानते थे। उनका नाम है राधाकिशन दमानी। डी-मार्ट के संस्थापक राधाकिशन दमानी को झुनझुनवाला अपना गुरु मानते थे और कहते थे कि उन्होंने दमानी से ही ट्रेडिंग के गुर सीखे।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं

नई दिल्ली । अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में बदलाव के बाद भी भारतीय बाजार में स्थिरता बनी हुई है। घरेलू बाजार में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। राजधानी दिल्ले ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और मुंबई में 106.31 रुपये लीटर पर है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 96.79 रुपये और डीजल 89.96 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.57 रुपये और डीजल 89.76 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

एमएसएमई क्षेत्र को फिर आत्मनिर्भर करने बैंक कर्ज देकर करें मदद : रावत

लखनऊ । देश में सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्योगों (एमएसएमई) को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एमएसएमई एक्सपोर्ट प्रमोशन कार्उंसिल ने कवायद शुरू की है। परिषद ने कोविड-19 महामारी से बुरी तरह प्रभावित इस इंडस्ट्री को मजबूती देने बैंकों से उन्हें और अधिक तत्परता से कर्ज़ देने को कहा है। कार्उंसिल के अध्यक्ष डी. एस. रावत ने रविवार को बातचीत में कहा कि खासतौर पर ग्रामीण इलाकों में शिल्प, कला और कृषि आधारित एमएसएमई इकाइयों को अपना अस्तित्व बचाने के लिए ज्यादा कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है। ऐसे में इन उद्योगों को समय से और वाजिब दर पर ऋण देने के वैकल्पिक स्रोत तैयार करने की फौरी जरूरत है। उन्होंने कहा कि एमएसएमई के लिए समय से पूंजी उपलब्ध नहीं हो पाना सबसे बड़ी चुनौती है। इसके परिणामस्वरूप या तो इन औद्योगिक इकाइयों को अपना कामकाज समेटना पड़ता है या फिर वे बिल्कुल ही बंद हो जाती हैं। उद्योग मंडल एसोचैम के पूर्व महासचिव ने कहा, 'ऐसे में यह जरूरी है कि एमएसएमई के लिए उपलब्ध वित्तपोषण के दायरे को और बढ़ाया जाए ताकि यह क्षेत्र समावेशी विकास और रोजगार सृजन के मामले में अपने उल्लेखनीय योगदान को जारी रख सके।' उन्होंने कहा कि सरकार को वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) सेवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि यह प्रौद्योगिकी उपभोक्ताओं के लिए मददगार है और इससे बैंकों पर निर्भरता भी कम होती है। रावत ने कहा कि अगर फिनटेक सेवाओं को प्रभावशाली ढंग से लागू किया जाए तो एमएसएमई क्षेत्र में हर साल रोजगार के कम से कम 50 लाख प्रत्यक्ष और इतने ही अप्रत्यक्ष अतिरिक्त अवसर पैदा होंगे। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर फिनटेक में निवेश सालाना 15 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है और वर्ष 2021 के अंत तक यह 50 अरब डॉलर के स्तर को छू चुका है। रावत ने कहा कि फिनटेक इस वक्त वित्तीय क्षेत्र की रीढ़ बन चुका है। यह कहना गलत नहीं होगा कि वित्तीय ढांचा पूरी तरह से एक नए फलक पर कदम रख रहा है।

अगस्त में 13 सोना खदानों को नीलाम करेगी केंद्र सरकार

नई दिल्ली ।

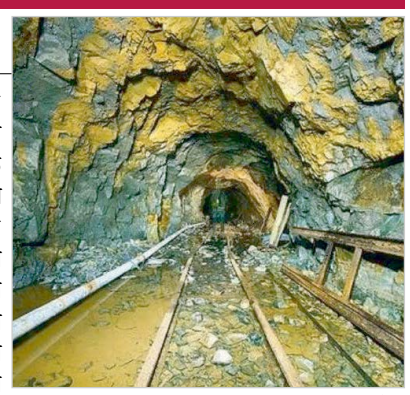

केंद्र सरकार खनन महकमे की एक दर्जन से अधिक खदानों को नीलाम करेगी। जानकारी के मुताबिक सरकार इस महीने आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश की 13 सोना खदानों की नीलामी करेगी। देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में खनन क्षेत्र के योगदान को बढ़ावा देने के प्रयासों के तहत सरकार सोने की खदानों की बिक्री की तैयारी कर रही है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, आंध्र प्रदेश के 10 ब्लॉकों में से पांच की नीलामी 26 अगस्त को हो सकती है, जबकि शेष पांच की नीलामी 29 अगस्त को होने की संभावना है। आंध्र प्रदेश में सोने की खदानों में रामगिरी नॉर्थ ब्लॉक, बोक्समपल्ली नॉर्थ ब्लॉक, बोक्समपल्ली साउथ ब्लॉक, जवाकुला-ए ब्लॉक, जवाकुला-बी ब्लॉक, जवाकुला-सी ब्लॉक, जवाकुला-डी ब्लॉक, जवाकुला-ई ब्लॉक, जवाकुला-एफ ब्लॉक शामिल हैं।

इन सोने की खदानों के लिए निविदा नोटिस मार्च में निकाला गया था। उत्तर प्रदेश में शेष तीन सोने की खदानों की नीलामी इसी माह होगी। लेकिन अभी इसके लिए कोई तारीख नहीं दी गई है। राज्य की तीन में से दो सोने की खदानें सोनभद्र में हैं। उत्तर प्रदेश में इन तीनों सोने की खदानों के लिए निविदा 21 मई को निकाली गई थी। सरकार ने मई में कहा था कि देश में खनिज ब्लॉकों की नीलामी स्थिर हो गई है। राज्यों ने चार अगस्त को 199 खनिज ब्लॉकों की नीलामी की थी। नीलामी के माध्यम से खनिज ब्लॉकों का आवंटन 2015 में खनन अधिनियम में संशोधन के बाद शुरू हुआ। पिछले वित्त वर्ष में 45 खनिज ब्लॉकों को बिक्री के लिए रखा गया था। केंद्र ने कहा था कि राज्य सरकारों को नीलामी से राजस्व का एक अच्छा हिस्सा मिल रहा है। खान मंत्रालय ने पहले कहा था कि खनिज नीलामी नियमों में संशोधन से प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलेगा जिससे ब्लॉकों की बिक्री में अधिक भागीदारी सुनिश्चित होगी।

ईंधन की खुदरा आपूर्ति पर रिलायंस, नायरा को चुकाना पड़ रहा है अप्रत्याशित लाभ कर

नई दिल्ली ।

ईंधन की खुदरा आपूर्ति रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी पेट्रोलियम रिफाइनरी कंपनियों को देश में अप्रत्याशित लाभ पर कर का भुगतान करना पड़ रहा है। कंपनियों पर अप्रत्याशित लाभ कर लगाया गया था। सूत्रों का कहना है कि इन कंपनियों को न केवल निर्यात पर, बल्कि घरेलू आपूर्ति पर भी अप्रत्याशित लाभ कर देना पड़ रहा है। सरकार ने एक जुलाई को भारत से निर्यात किए जाने वाले डीजल पर 13 रुपये प्रति लीटर का अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लगाया था। इसके अलावा पेट्रोल और विमान ईंधन (एटीएफ) के निर्यात पर छह रुपये प्रति लीटर का कर लगाया गया था। साथ ही सरकार ने निर्यात पर अंकुश भी लगाया था। इन कंपनियों को पेट्रोल के कुल निर्यात पर 50 प्रतिशत और डीजल पर 30 प्रतिशत घरेलू आपूर्ति करनी थी। एक पखवाड़े के बाद हुई समीक्षा में सरकार ने पेट्रोल और जेट ईंधन पर निर्यात कर समाप्त कर दिया था। वहीं डीजल पर इसे आधे से अधिक घटाकर पांच रुपये प्रति लीटर कर दिया था। इस मामले की जानकारी रखने वाले तीन सूत्रों ने बताया कि अप्रत्याशित लाभ कर का सबसे अधिक बोझ रिलायंस इंडस्ट्रीज और रोसनेफ्ट समर्थित रूसी कंपनी नायरा एनर्जी पर पड़ा था। सरकार का मानना था कि ये कंपनियां रूस से बेहद रियायती दरों पर ईंधन खरीदकर उसका निर्यात कर रही हैं और जबर्दस्त मुनाफा काट रही हैं। एक जुलाई के बाद पेट्रोल और डीजल का निर्यात करने वाली रिफाइनरी कंपनियों की प्राप्तियां कम हुई हैं और लगातार निर्यात के लिए उन्हें घरेलू आपूर्ति बढ़ानी होगी। ये आपूर्ति वे सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम विपणन कंपनियों, थोक बिक्री या खुदरा बिक्री के रूप में बढ़ाएंगी। वहीं दूसरी ओर सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियों (ओएमसी) मसलन हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (एचपीसीएल) और भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (बीपीसीएल) ने रिलायंस और अन्य एकल रिफाइनरियों से खरीदे गए पेट्रोल, डीजल के लिए भुगतान अतिरिक्त उत्पाद शुल्क को काटकर करना शुरू कर दिया है।

सूत्रों ने बताया कि ओएमसी को बिक्री के लिए रिफाइनरी कंपनियों को अंतरराष्ट्रीय मूल्य मिलता है क्योंकि रिफाइनरी स्थानांतरण मूल्य 80 प्रतिशत आयात समतुल्य और 20 प्रतिशत निर्यात समतुल्य से निर्धारित किया जाता है।

मेडीक्लेम कारोबार में फिर उतरना चाहती है बीमा क्षेत्र की दिग्गज एलआईसी : कुमार

मुंबई ।

जीवन बीमा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी एलआईसी एक बार फिर मेडिक्लेम कारोबार में कदम रखना चाहती है। बीमा नियामक से स्थिति स्पष्ट होते ही एलआईसी इस दिशा में अपने कदम बढ़ा सकती है। भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के चेयरमैन एमआर कुमार ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा हम पहले से ही दीर्घकालिक स्वास्थ्य बीमा और गारंटी देने वाले स्वास्थ्य उत्पादों की पेशकश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम बीमा नियामक से हाल ही में आए सुझाव की भी समीक्षा कर रहे हैं। कुमार ने कहा मुझे नहीं लगता है कि हमारे लिए मेडिक्लेम कारोबार में उतरना मुश्किल होगा। हम पहले से ही कुछ स्वास्थ्य बीमा उत्पाद मुहैया करा रहे हैं। मेडिक्लेम पॉलिसी असल में मुआवजे पर आधारित स्वास्थ्य बीमा योजनाएं ही होती हैं और ये देश में सर्वाधिक लोकप्रिय स्वास्थ्य बीमा उत्पाद हैं।

हालांकि, भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) ने वर्ष 2016 में जीवन बीमा कारोबार में लगी कंपनियों को मेडिक्लेम पॉलिसी की पेशकश करने से रोक दिया था। उसके बाद से जीवन बीमा कंपनियों को सिर्फ तय लाभ वाली स्वास्थ्य योजनाओं की ही पेशकश करने की इजाजत है। मुआवजा आधारित स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के तहत बीमा कंपनियां इलाज के दौरान खर्च हुई रकम की भरपाई करती हैं जो बीमित राशि के भीतर हो। वहीं तय लाभ वाली स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के तहत पॉलिसीधारक को पूर्व-चिह्नित बीमारी या स्वास्थ्य स्थिति के लिए एक तय राशि दी जाती है। इरडा के चेयरमैन देवाशीष पांडा ने हाल में कहा था कि अब जीवन बीमा कंपनियों के फिर से मेडिक्लेम में प्रवेश करने का वक्त आ गया है। उन्होंने वर्ष 2030 तक देश के हरेक नागरिक के पास स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी होने का लक्ष्य हासिल करने को भी कहा है। वैश्विक स्तर पर अधिकांश देशों में जीवन बीमा कंपनियां स्वास्थ्य बीमा योजनाओं की भी बिक्री करती हैं।

एशियाई खेलों, ओलंपिक में पदक जीतना अगला लक्ष्यः पहलवान मोहित

भिवानी । राष्ट्रमंडल खेलों में 125 किलोग्राम भार वर्ग की फ्री स्टाईल कुश्ती स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने वाले मोहित ग्रेवाल ने रविवार को यहां कहा कि अब उनका अगला लक्ष्य एशियाई खेलों और ओलंपिक जैसे आयोजनों में पदक जीतना है। पदक जीतकर अपने पैतृक गांव बामला लौटे मोहित का यहां के घंटाघर चौक पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसके बाद विजय जुलूस निकालते हुए उसे गांव बामला तक ले जाया गया। बामला में भी मोहित का भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। स्थानीय प्रशंसकों ने मोहित का स्वागत फूल-मालाओं, ढ़ोल-नगाड़ों व नोटों की मालाओं के साथ स्वागत किया। इस मौके पर मोहित ने कहा कि वह अपनों के बीच पहुंचकर गौरवान्वित महसूस कर रहे है। उन्होंने कहा, 'मै इस पदक को गुरु, परिवार व खेल प्रेमियों की दुआओं के चलते जीत पाया हूं। अब मेरा ध्यान आगामी प्रतियोगिताओं पर है। मैं अगले साल एशियाई खेलों और 2024 में ओलंपिक में इससे बेहतर प्रदर्शन करना चाहता हूं।

निकहत जरीन और हिमा दास ने पीएम मोदी को दिया खास तोहफा

नई दिल्ली ।

भारतीय खिलाड़ियों ने बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों में शानदार प्रदर्शन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सम्मानित किए जाने पर खुशी और आभार व्यक्त किया जिसमें निकहत जरीन ने उन्हें मुक्केबाजी 'ग्लव्ज' और स्प्रिंटर हिमा दास ने पारंपरिक असमी गमछा उपहार में दिया। मोदी ने शनिवार को अपने निवास पर भारतीय दल की मेजबानी की और खिलाड़ियों को सम्मानित किया। भारतीय खिलाड़ियों ने बर्मिंघम में शानदार प्रदर्शन करते हुए 61 पदक हासिल किये जिसमें 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य पदक शामिल हैं। मुक्केबाज निकहत ने ट्वीट किया, 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर को सभी मुक्केबाजों के हस्ताक्षर किए हुए मुक्केबाजी 'ग्लव्ज' उपहार में देने से सम्मानित महसूस कर रही हूं। इस शानदार मौके के लिए आपका शुक्रिया। देश को गौरवान्वित करने वाले अपने साथी खिलाड़ियों के साथ शानदार दिन बिताया।' विश्व चैम्पियनशिप की स्वर्ण पदक विजेता स्टार मुक्केबाज निकहत ने बर्मिंघम में अपने वजन वर्ग में स्वर्ण पदक जीता था। हिमा ने अपने ट्विटर हैंडल पर लिखा, 'राष्ट्रमंडल खेल 2022 की बदौलत हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आर्शीवाद प्राप्त करके उत्साहित हूं। भाग्यशाली हूं कि उन्हें हमारा पारंपरिक गमछा उपहार में पेश किया जो पूरे असम की कृतज्ञता से भरा है। टोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक रजत पदक जीतने के एक साल बाद राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली चैम्पियन भारोत्तोलक मीराबाई चानू ने प्रधानमंत्री को उनकी प्रोत्साहन भरी बातों के लिए धन्यवाद कहा। चानू ने कहा, 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर से मिलने और बातचीत करने के बाद सम्मानित महसूस कर रही हूं। आपके समर्थन और प्रोत्साहन के लिए शुक्रिया सर। जय हिंद।' प्रधानमंत्री ने भारतीय दल का अभिनंदन करते हुए शनिवार को कहा कि भारतीय खेलों का स्वर्णिम काल दस्तक दे रहा है और अच्छे प्रदर्शन पर संतोष करके चुप नहीं बैठना है। बैडमिंटन खिलाड़ी चिराग शेट्टी ने

'माइक्रोब्लागिंग साइट' पर लिखा, 'अपना कीमती वक्त निकालने और हमें अपने निवास पर आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद सर। आपके साथ बात करना हमेशा ही शानदार रहता है।

चिराग शेट्टी के युवा बैडमिंटन साथी लक्ष्य सेन ने भी प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित किए जाने पर आभार व्यक्त किया। उन्होंने ट्वीट किया, 'सभी खिलाड़ियों के लिए कितना शानदार दिन रहा, आभार। हमारी कड़ी मेहनत की प्रशंसा करने और प्रोत्साहन भरे शब्दों के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हम सभी आपके समर्थन के आभारी हैं। अपने देश को गौरवान्वित करना जारी रखेंगे। जय हिंद।'

स्टार पैरा टेबल टेनिस खिलाड़ी भाविना पटेल ने कहा, 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से एक बार फिर मिलना, उनसे बातचीत करना और उनका आर्शीवाद लेना हमेशा की तरह प्रेरणादायी रहा। हमारे प्रदर्शन में उनकी दिलचस्पी और इसके बारे में विस्तृत बातचीत बहुत ही संतुष्टि देती है।'

विनेश फोगाट का खुलासा, कुश्ती छोड़ने का फैसला कर लिया था; पीएम मोदी ने किया प्रेरित

नई दिल्ली ।

विनेश फोगाट ने शनिवार को कहा कि टोक्यो में ओलंपिक में लगातार दूसरी बार पदक से चूकने के बाद उन्होंने लगभग कुश्ती छोड़ने का मन बना ही लिया था लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बातचीत ने उन्हें खेल में जारी रहने के लिए प्रेरित किया। 2016 रियो ओलंपिक में क्वार्टरफाइनल में घुटने की चोट से उनकी पदक की उम्मीद टूट गई लेकिन टोक्यो में वह अंतिम आठ चरण में बाहर हो गईं जबकि वह अपने वजन वर्ग में दुनिया की नंबर पहलवान के तौर पर उतरी थीं। विनेश ने स्वीकार किया कि इन दो निराशाओं ने उन्हें कुश्ती छोड़ने की कगार पर पहुंचा दिया था लेकिन उन्होंने फिर वापसी करते हुए हाल में समाप्त हुए बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता। इस स्टार पहलवान ने कहा, 'निश्चित रूप से, आप कह सकते हैं (विनेश 2.0 रिलोडिड)। मैं मानसिक रूप से बहुत बड़े 'बैरियर' को पार करने में सफल हुई हूं। मैंने लगभग कुश्ती छोड़ ही दी थी क्योंकि दो ओलंपिक में मैं एक पदक नहीं जीत सकी थी। ओलंपिक किसी भी खिलाड़ी के लिए बड़ा मंच होता है। लेकिन मेरे परिवार ने हमेशा मेरा समर्थन किया, उन्हें हमेशा मेरी काबिलियत पर भरोसा रहा।' उन्होंने कहा, 'जब मैं निराश थी तो मैं मोदी जी (नरेंद्र मोदी) से मिली थी और उन्होंने मुझे प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हमें आप पर भरोसा है और आप कर सकती हो। इससे मेरे अंदर जज्बा फिर से जाग गया।'

दो बार की चैम्पियन सिमोना हालेप टोरंटो फाइनल में पहुंची

टोरंटो :

दो बार की चैम्पियन सिमोना हालेप ने अमरीका की जेसिका पेगुला को हराकर नेशनल बैंक टेनिस ओपन के फाइनल में प्रवेश किया, जहां उनका सामना ब्राजील की बिट्रिज हदाद माइया से होगा। रोमानिया की हालेप ने सेमीफाइनल में पेगुला को 2-6 6-3 6-4 से शिकस्त दी। वहीं हदाद माइया ने दूसरे सेमीफाइनल में चेक गणराज्य की 14वीं वरीय कैरोलिना प्लिस्कोवा पर 6-4, 7-6 से जीत हासिल की। पंद्रहवीं वरीयता प्राप्त हालेप ने 2016 और 2018 में मांट्रियल में टूर्नामेंट जीता था।

आईओए ने राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया

नई दिल्ली ।

भारतीय ओलिम्पिक संघ (आईओए) ने शनिवार को यहां एक समारोह में बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया। आईओए ने प्रत्येक स्वर्ण पदक विजेता को 20 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जबकि रजत और कांस्य विजेताओं को क्रमशः 10 लाख रुपए और 7.5 लाख रुपए का पुरस्कार दिया गया। इस कार्यक्रम में आईओए के कार्यवाहक अध्यक्ष अनिल खन्ना, महासचिव राजीव मेहता, कोषाध्यक्ष आनंदेश्वर पांडे, और बर्मिंघम खेलों के भारत के 'शेफ डे मिशन (दल प्रमुख) राजेश भंडारी सहित अन्य लोग उपस्थित थे। खन्ना ने भारतीय एथलीटों के प्रदर्शन की सराहना की, जिससे देश बहु-खेल स्पर्धा से निशानेबाजी की गैरमौजूदगी के बावजूद पदक तालिका में चौथे स्थान पर रहा। भारत ने इन राष्ट्रमंडल खेलों में 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य के साथ कुल 61 पदक जीते। गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों 2018 में देश ने सिर्फ निशानेबाजी में 16 पदक जीते थे।

संक्षिप्त समाचार

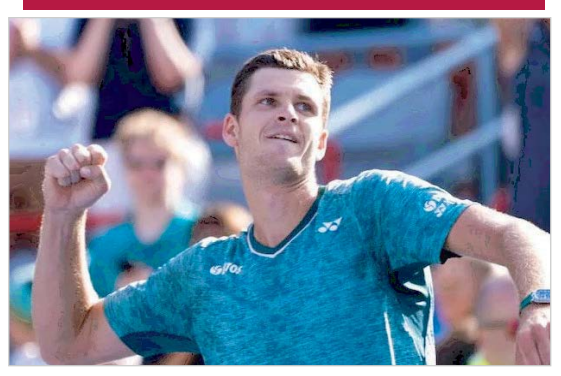

रूड को हराकर मॉन्ट्रियल ओपन फाइनल में पहुंचे हरकाज

मॉन्ट्रियल । पोलैंड के आठवीं सीड खिलाड़ी ह्यूबर्ड हरकाज ने रविवार को नेशनल बैंक ओपन में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए नॉर्वे के कैस्पर रूड को हराकर फाइनल में जगह बनाई। हरकाज ने दो घंटे दो मिनट चले सेमीफाइनल में पहला सेट हारने के बाद दमदार वापसी की और रूड को 5-7, 6-3, 6-2 से हराकर इस हफ्ते लगातार चौथी बार तीन सेटों में जीत दर्ज की। हरकाज़ ने एटीपी मास्टर्स 1000 आयोजन के फाइनल में जगह बनाने के बाद कहा, मैं मैच में बने रहने की कोशिश कर रहा था। कैस्पर वास्तव में अविश्वसनीय टेनिस खेल रहे थे और वह शुरुआत में बेहतर खिलाड़ी थे, खासकर पहले सेट के दौरान। मैं खेल में बने रहने की कोशिश कर रहा था और जितना अच्छा हो सके मुकाबला करने के लिए पकड़ बना रहा था। अब हरकाज मॉन्ट्रियल ओपन के फाइनल में स्पेन के पाब्लो कारेनो बुस्ता का सामना करेंगे जो सेमीफाइनल में डेनियल इवान्स को 7-5, 6-7(7), 6-2 से हराकर आ रहे हैं।

भारतीय टीम के पास टी20 प्रारुप में कई अच्छे गेंदबाज : पोंटिंग

इसलिए शमी को नहीं मिली टीम में जगह

दुबई । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कहा है कि भारतीय टीम के पास टी20 प्रारुप में कई अच्छे गेंदबाज हैं। इसलिए मो शमी को एशिया कप के लिए टीम में जगह नहीं मिली है। पोंटिंग ने कहा कि शमी लंबे प्रारूप के लिये सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज हैं पर टी20 टीम में उनसे बेहतर कई तेज गेंदबाज हैं। एशिया कप के लिए भारत ने भुवनेश्वर कुमार, आवेश खान और अर्शदीप सिंह जैसे तीन विशेषज्ञ तेज गेंदबाजों को शामिल किया है। इसके साथ ही ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या भी भारत की 15 सदस्यीय टीम में चौथे तेज गेंदबाज के तौर पर शामिल किये गये हैं। पोंटिंग के अनुसार शमी काफी समय से भारतीय टीम के लिए अच्छे तेज गेंदबाज रहे हैं। अगर आप उनकी क्षमताओं को देखो तो वह टेस्ट क्रिकेट में ज्यादा बेहतर प्रदर्शन करते हैं। मेरा मानना है कि भारतीय टी20 क्रिकेट टीम में शमी से कहीं बेहतर तेज गेंदबाज हैं। इसी लिए उन्होंने एशिया कप के लिए केवल तीन गेंदबाजों का ही चयन किया है पर अगर टीम में संभावित चार नाम होते तो वो चौथे तेज गेंदबाज हो सकते थे। वहीं इससे पहले कई लोगों का मानना था कि जसप्रीत बुमराह के बाहर होने के कारण शमी को अनुभवी होने के नाते एशिया कप के लिए शामिल किया जाना चाहिये था। एशिया कप 27 अगस्त से 11 सितंबर तक दुबई और शारजाह में आयोजित किया जायेगा और पोंटिंग ने इसमें भारत को प्रबल दावेदार बताया है।

शॉपमैन के व्यावहारिक दृष्टिकोण ने मेरा सर्वश्रेष्ठ लाने में मदद की : ज्योति

नई दिल्ली (एजेंसी)

भारतीय महिला हॉकी टीम की फॉरवर्ड ज्योति ने कहा कि मुख्य कोच यानेके शॉपमैन के व्यावहारिक दृष्टिकोण ने उन्हें अपने खेल में काफी सुधार करने में मदद की जिससे वह राष्ट्रमंडल खेलों में पदार्पण में अच्छा प्रदर्शन करने में सफल रहीं। ज्योति उस भारतीय महिला हॉकी टीम का हिस्सा थीं जिसने बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में 16 साल का पदक सूखा खत्म कर यादगार कांस्य पदक जीता। उन्होंने हॉकी इंडिया की विज्ञप्ति में कहा- खिलाडियों और कोचिंग स्टाफ ने मुझे मेरे खेल में सुधार करने में सचमुच काफी मदद की। अब मैं काफी आत्मविश्वास से खेलती हूं और मेरे प्रदर्शन में काफी सुधार हुआ है। ज्योति ने कहा- कोचिंग स्टाफ ने मैदान में कुछ अलग करने के लिए मेरा काफी आत्मविश्वास बढ़ाया है। शॉपमैन के प्रभाव पर उन्होंने कहा, ''यानेके ने मुझे मेरे खेल में सुधार करने में मदद की है।

उन्होंने मुझे सिखाया कि खेल को खुद के लिये आसान किस तरह बनाया जाये। अब मैं गेंद के बारे में ज्यादा विचार नहीं करती। उन्होंने कहा- अभ्यास सत्र के दौरान उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण से मेरे कौशल में निखार हुआ है।

पहले राष्ट्रमंडल खेलों के बारे में उन्होंने कहा-राष्ट्रमंडल खेल मेरे लिए काफी महत्वपूर्ण थे क्योंकि टीम के लिए यह मेरा पहला बहु-स्पर्धा टूर्नामेंट था।

उन्होंने कहा कि कांस्य पदक जीतने से हम सभी काफी खुश थे और गर्व महसूस कर रहे थे क्योंकि यह हर किसी के प्रयास का सही पुरस्कार था। कांस्य पदक ने इस पदार्पण को मेरे लिये दोगुना विशेष बना दिया।

पार्थिव पटेल बोले- रोहित शर्मा की यह बात है सबसे अलग, बुमराह को बताया भविष्य का कप्तान

नई दिल्ली ।

भारत के पूर्व विकेटकीपर-बल्लेबाज पार्थिव पटेल ने कहा कि खिलाड़ियों के प्रदर्शन नहीं करने पर भी कप्तान रोहित शर्मा का उनका समर्थन करना एक असाधारण बात है। पार्थिव ने पहले तीन मैचों में प्रभावशाली प्रदर्शन के बावजूद वेस्टइंडीज पर 4-1 से टी20 इंटरनेशनल श्रृंखला जीत में भारतीय टीम के तेज गेंदबाज अवेश खान के साथ बने रहने का उदाहरण दिया। पार्थिव ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, मैंने मुंबई इंडियंस में रोहित शर्मा की कप्तानी में खेला है और एक बात जो सामने आती है वह यह है कि वह उन खिलाड़ियों का समर्थन करता है जो प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। वह सार्वजनिक रूप से और प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी उनके बारे में बात करता हैं, जैसा कि हमने अवेश के मामले में देखा था। रोहित ने चार विफलताओं के बाद भी उनका समर्थन किया और उन्होंने मैन ऑफ द मैच प्रदर्शन (चौथे टी20 में) किया। पार्थिव ने आगे रोहित के नेतृत्व कौशल में तल्लीन किया और मैदान पर सहज निर्णय लेने की उनकी क्षमता से प्रभावित थे। उनका मानना है कि आईपीएल में सफलता हासिल करने और एक नेता के रूप में भारत के लिए यही कारण है। रोहित पूर्व-ध्यान करने के बजाय जमीन पर सहज निर्णय लेने में विश्वास करते हैं। जब एक संकट की स्थिति पैदा होती है, तो वह स्थिति के अनुसार निर्णय लेता है और यह मुख्य कारणों में से एक है कि उसने मुंबई इंडियंस के साथ पांच आईपीएल ट्राफियां जीती हैं। भारत ने रोहित की कप्तानी में एशिया कप और निदास ट्रॉफी जैसे बहुराष्ट्रीय टूर्नामेंट भी जीते हैं। एक भरे हुए क्रिकेट कार्यक्रम के कारण रोहित ने त्रिनिदाद में वेस्टइंडीज पर 3-0 से एकदिवसीय श्रृंखला जीत में भारत की कप्तानी नहीं की। उनकी अनुपस्थिति में बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए कदम बढ़ाया और इसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पार्थिव को लगता है कि धवन का नेतृत्व का सहज तरीका खिलाड़ियों को अभिव्यंजक होने का लाइसेंस देता है। उन्होंने कहा, शिखर धवन की कप्तानी की एक बहुत ही शांत शैली है जहां वह बहुत अधिक दबाव नहीं लेते हैं और टीम के माहौल को हल्का रखते हैं।

एशिया कपः भारत-पाक मैच के टिकट आज से मिलेंगे

नई दिल्ली । भारत ओर पाकिस्तान के बीच एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट में होने वाले मैच के टिकट सोमवार 15 अगस्त से बिकने शुरू होंगे। 27 अगस्त से शुरू हो रहे इस टूर्नामेंट में 28 अगस्त को भारत और पाकिस्तान का मुकाबला होगा। इस मैच का दोनों देशों के क्रिकेट प्रशंसक बेताबी से इंतजार कर रहे हैं। एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) ने एक ने ट्वीट कर यह जानकारी दी।एसीसी ने लिखा, 'एशिया कप 2022 के लिए टिकटों की बिक्री 15 अगस्त से शुरू होगी।' इसके साथ ही एसीसी ने उस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की भी जानकारी साझा की, जिसके जरिए प्रशंसक एशिया कप के टिकट खरीद सकते हैं। एशिया कप टूर्नामेंट पहले श्रीलंका में खेला जाना था पर वहां जारी राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता के कारण आयोजन समिति ने इस टूर्नामेंट को यूएई स्थानांतरित कर दिया है एशिया कप में भारत सबसे सफल टीम है। भारतीय टीम ने सबसे ज्यादा 7 बार खिताब जीता है जबकि श्रीलंकाई टीम 5 बार खिताब जीतने में सफल रही है। वहीं पाक ने 2 बार एशिया कप जीता है। भारत-पाक टीमों के बीच आज तक कभी फाइनल नहीं हुआ।

फीफा प्रतिबंध की धमकी पर छेत्री ने खिलाड़ियों से कहा, ज्यादा ध्यान मत दो

बेंगलुरू ।

अनुभवी स्ट्राइकर सुनील छेत्री ने रविवार को साथी खिलाड़ियों को भारतीय फुटबॉल पर फीफा निलंबन के खतरे पर ज्यादा चिंता नहीं करने और मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखने की सलाह दी। इस महीने के शुरू में विश्व फुटबॉल संचालन संस्था फीफा ने तीसरे पक्ष के 'हस्तक्षेप' के कारण अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) को निलंबित करने और इससे अक्टूबर में महिला अंडर-17 विश्व कप की मेजबानी के अधिकार छीनने की धमकी दी थी। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय महासंघ को चुनाव कराने का निर्देश दिया था जिसके कुछ ही दिन बाद यह चेतावनी जारी की गयी थी। उच्चतम न्यायालय द्वारा नियुक्त की गई प्रशासकों की समिति (सीओए) ने हालांकि तब से चुनावी प्रक्रिया शुरू कर दी है और चुनाव 28 अगस्त को कराये जाने हैं। छेत्री ने नये सत्र की तैयारियों पर उनके क्लब बेंगलुरू एफसी द्वारा आयोजित वर्चुअल मीडिया बातचीत के दौरान कहा, 'मैंने लड़कों से बात की है और मेरी सलाह है कि ज्यादा ध्यान इस पर मत लगाओ क्योंकि यह आपके नियत्रंण से बाहर की चीज है। उन्होंने कहा, 'जो लोग शामिल हैं, वो यह सुनिश्चित करने के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं कि हम सर्वश्रेष्ठ संभव नतीजा हासिल कर लेंगे।' छेत्री ने कहा, 'हर कोई इस ओर कड़े प्रयास कर रहा है। जहां तक खिलाड़ियों का संबंध है तो हम सुनिश्चित करेंगे कि हम अपना काम उचित तरीके से करें।' उन्होंने कहा, 'हमें सुनिश्चित करना होगा कि आप खुद को बेहतर खिलाड़ी बनाओ। जब भी आपको अपने क्लब या अपने देश के प्रतिनिधित्व का मौका मिले तो अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो। छेत्री ने कहा, 'एआईएफएफ में सभी हर संभव तरीके से इससे निपटने की कोशिश कर रहे हैं ताकि नतीजा हमारे हक में रहे।' भारत को 11 से 30 अक्टूबर तक फीफा महिला अंडर-17 विश्व कप की मेजबानी करनी है। डूरंड कप 16 अगस्त से कोलकाता में शुरू होगा जिसमें बेंगलुरू एफसी का सामना टूर्नामेंट के दूसरे दिन जमशेदपुर एफसी से होगा। बेंगलुरू एफसी ने 2013 में आने के बाद लगभग हर बड़ा राष्ट्रीय खिताब अपने नाम किया है इसलिये टीम अपनी 'ट्राफी कैबिनेट' में डूरंड कप ट्राफी अपने नाम करने के लिये बेताब होगी। छेत्री ने कहा, 'यह बहुत ही विशेष है। यह सबसे पुराने टूर्नामेंट में से एक है जो बहुत बड़ी बात है। लेकिन क्लब ने भी यह खिताब नहीं जीता है और व्यक्तिगत रूप से भी मैंने डूरंड कप नहीं जीता है।

(पेरिस) फ्रेंच लीग : नेमार के शानदार प्रदर्शन से पीएसजी ने मोंटपेलियर को 5-2 से हराया

पेरिस । नेमार के दो गोल की सहायता से पेरिस सेंट जर्मेन क्लब (पीएसजी) क्लब ने फ्रेंच लीग फुटबॉल मैच में मोंटपेलियर को 5-2 से हराया है। नेमार के अलावा कालियान एमबापे ने भी एक गोल किया। नेमार ने दो गोल किये। इससे उनके दो लीग मैचों में तीन गोल हो गये हैं। वहीं एक अन्य स्टार खिलाड़ी लियोनल मेसी कोई गोल नहीं कर पाये। मोंटपेलियर के फालाये साको ने एमबापे के शॉट को रोकने के दौरान 39वें मिनट में एक आत्मघाती गोल कर दिया। जिससे पीएसजी की टीम को 1-0 की बढ़त मिल गयी। वहीं इसके बाद नेमार ने 43वें मिनट में पेनल्टी से गोल कर टीम को 2-0 की बढ़त दिला दी। इसके बाद 51वें मिनट में नेमार ने अपना दूसरा गोल किया। एमबापे ने 69वें मिनट में जबकि रेनाटो सांचेज ने 87वें मिनट में गोल किया। दूसरी ओर मोंटपेलियर की ओर से वाहबी खाजरी ने 58वें मिनट में और एंजो जियानी ने अंतिम क्षणों में एक गोल दागा पर तब तक मैच पीएसजी के कब्जे में आ गया था।

'अमृत काल' में बनाएंगे जनता के सपनों का गुजरात :मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल

गांधीनगर । भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। यह अवसर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिवीरों के संघर्षों को याद करने का है, जिन्होंने गुलामी की बेड़ियों में सैकड़ों वर्षों तक जकड़ी रही भारत माता को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महान वीरों और गुमनाम बलिदानियों के योगदान को उजागर करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आजादी की 75वीं वर्षगांठ को 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाने का आह्वान किया। 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से इसकी शुरुआत हुई। गुजरात आजादी के इस 'अमृत महोत्सव' को पूरे उत्साह और उमंग के साथ मना रहा है। देश के स्वाधीनता संग्राम में गुजरात के योगदान का एक सुनहरा इतिहास है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और सरदार पटेल के अलावा गुजरात के अनेक सपूतों ने आजादी की जंग में बहुमूल्य योगदान दिया था।

अहमदाबाद का साबरमती आश्रम उन दिनों स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र बिंदु हुआ करता था। देश भर के नेता, विचारकों, समाजसेवकों और कार्यकर्ताओं का वहां जमावड़ा लगा रहता था। महात्मा गांधी के सान्निध्य में यहां देश को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराने की रणनीतियां और कार्यक्रम बनाए जाते थे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में इसी साबरमती आश्रम से शुरू हुई दांडी यात्रा ने ब्रिटिश सल्तनत की नींव हिला दी थी। लौह पुरुष वल्लभभाई पटेल ने बारडोली सत्याग्रह के माध्यम से अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लिया। इस सफल आंदोलन के बाद उन्हें 'सरदार' की उपाधि से नवाजा गया। सरदार पटेल ने 562 रियासतों का भारत संघ में विलीनीकरण कर अखंड भारत के निर्माण का ऐतिहासिक कार्य किया था। नरेन्द्र मोदी ने भारतमाता के इस सपूत की दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के निर्माण के माध्यम से उन्हें यथोचित श्रद्धांजलि दी है। इनके अलावा, श्यामजी कृष्ण वर्मा, मैडम भीखाजी कामा और सरदार सिंह राणा जैसे अनेक गुजरातियों ने देश की आजादी के लिए अपना योगदान दिया था। गुजरात में स्वतंत्रता आंदोलन में आदिवासी समाज का अहम योगदान रहा था। इसे गुजरात का 'जलियांवाला कांड' घटनाओं की उपेक्षा की गई। गोविंद गुरु के नेतृत्व में गुजरात के मानगढ़ में अंग्रेजों की विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते हुए लगभग 1500 आदिवासी शहीद हुए थे। साबरकांठा जिले के पाल दढवाव में भी अंग्रेजों ने 1200 से अधिक निर्दोष आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को गोलियों से छलनी कर दिया था। सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' नरेन्द्र मोदी ने बतौर मुख्यमंत्री राज्य की भी कहते हैं। नरेन्द्र मोदी के मुख्यमंत्री काल के दौरान आदिवासियों की शहादत को उजागर करने के लिए यहां शहीद स्मारक का निर्माण किया गया था। 1 मई, 1960 को जब गुजरात राज्य की स्थापना हुई, तब इस प्रदेश के सामने अनेक चुनौतियां थीं। मुंबई जैसे समृद्ध राज्य से अलग होकर अस्तित्व में आने के बाद गुजरात ने एक राज्य के रूप में अपनी यात्रा को मजबूत और अटल हौसले के साथ शुरू किया। उस दौर में जब कृषि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हुआ करती थी, तब गुजरात पानी की भारी कमी और कम वर्षा वाला राज्य होने के कारण कृषि क्षेत्र में संकटों से जूझ रहा था। लेकिन स्वाभिमानी तथा जोश एवं जज्बे से भरे गुजरातियों ने अथक पुरुषार्थ कर गुजरात को कृषि सहित सभी क्षेत्रों में अग्रणी बनाया।

गुजरात की विकास गाथा का एक नया और स्वर्णिम अध्याय तब शुरू हुआ, जब अप्रैल और मई महीने की तपती दुपहरी में नरेन्द्र मोदी ने बतौर मुख्यमंत्री राज्य की कमान संभाली।

उन्होंने विनाशकारी भूकंप के सदमे से गुजरात को उबारकर विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ाया। उन्होंने प्रशासनिक शिथिलता के वातावरण को चुस्त-दुरुस्त बनाया और लोगों में भी उत्साह का संचार किया। नेता के रूप में अपनी नीति, रीति और कार्यों से नरेन्द्र मोदी ने नेतृत्व की एक नई परिभाषा गढ़ी। राज्य के विकास को लेकर उनकी स्पष्ट एवं प्रभावी नीतियों का ही नतीजा है कि गुजरात का 'विकास मॉडल' देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में चर्चित हो गया। गुजरात देश के 'ग्रोथ इंजन' के रूप में जाना जाने लगा है। गुजरात की विशेषकर गत दो दशकों की विकास यात्रा लोगों के लिए शोध का विषय बन गई है। कृषि क्षेत्र में गुजरात ने नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक नई हरित क्रांति की अगुवाई की है। कृषि महोत्सव की शुरुआत कर उन्होंने गांव-गांव जाकर किसानों से संवाद किया और उन्हें नई तकनीक और उपकरणों की सौगात दी।

नतीजा यह रहा कि वर्ष 2002 में 23.48 लाख मीट्रिक टन अनाज उत्पादन के मुकाबले आज 83.25 लाख मीट्रिक टन का उत्पादन कर गुजरात कृषि क्रांति की नई इबारत लिख रहा है। इसी तरह, सरदार सरोवर बांध और 69,000 किलोमीटर लंबे कैनाल नेटवर्क के साथ ही लाखों चेकडैम के निर्माण से गुजरात के किसानों की सिंचाई सुविधा को सुदृढ़ बनाया है। पशु स्वास्थ्य मेलों का आयोजन कर पशुओं के उपचार और देखभाल का अभियान चलाया है। इसके परिणामस्वरूप गुजरात का दूध उत्पादन वर्ष 2002 के 60 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर आज 158 लाख मीट्रिक टन हो गया है। शिक्षा क्षेत्र की बात करें तो गुजरात में कन्या शिक्षा और स्कूल ड्रॉपआउट की दर एक बड़ी चिंता का विषय थी।

सूरत भूमि, सूरत। वार्ड नंबर 27 डिंडोली दक्षिण के महामंत्री शंकर भाई दुबे का जन्मदिन बड़े ही धूमधाम से मनाए गए मनाया गया। इस अवसर पर विस्तार के पार्षद एवं वार्ड के प्रमुख पदाधिकारियों द्वारा जन्मदिन बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

मानव सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के आशीर्वाद मानव मंदिर में रक्षाबंधन का आयोजन हुआ

रक्षाबंधन के उपलक्ष में धारा महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती रंजना बैंन शिंदे द्वारा मानव सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के आशीर्वाद मानव मंदिर में रक्षाबंधन का आयोजन किया जिनमें उनके साथी बहने सोनाली बेंन भदाणी कंचनबेन चंद्रवंशी प्रिया बहन तिवारी एवं सुमन बहन के साथ आश्रम के बिन वारसी लोग जिनकी आज कोई राखी बांधने वाली बहने नहीं है ऐसे आश्रम के मंदबुद्धि व्यक्तियों को कुमकुम चांवल से तिलक लगाकर राखी बांधकर मिठाई खिलाकर उनके हृदय को एक बहुत ही प्रसन्नता प्रदान की साथ ही आश्रम के संचालक जयराम भाई भगत वरिष्ठ कार्यकर्ता राजेंद्र भाई गौतम एवं अन्य कर्मचारी गणों को भी रक्षा सूत्र के धागों में पिरोया सोचने वाली बात है कि रंजना बहन की ऐसी सोच आज के दिन जिन भाइयों के बहने नहीं है और है तो उनका कोई अता पता नहीं है ऐसे मंदबुद्धि पागल जो रोड पर गंदी हालत में घूमते रहते हैं कचरा पेटी में कुछ खाने का ढूंढते रहते हैं लंबे बाल लंबे नाखून लंबी दाढ़ी बहुत ही गंदी हालत में फटे पुराने कपड़े पहने या नंगे हालत में रहने वाले लोगों की सेवा करने वाली संस्था आशीर्वाद मानव मंदिर में आकर रक्षाबंधन मनाया बहुत ही गर्व एवं हिम्मत का कार्य बहुत ही उत्साह पूर्वक मनाया आशीर्वाद मानव मंदिर के संचालक श्री जयराम भाई एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेंद्र गौतम द्वारा धारा महिला मंडल प्रमुख श्रीमती रंजना बैन शिन्दे एवं उनकी सभी साथी बहनों का इस आयोजन के प्रति हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया।

IDT छात्रों ने मनाया सूरत एयरपोर्ट पर आजादी का 75 स्वतंत्रता दिवस

सरत भूमि, सूरत। IDT छात्रों ने आज सूरत एयरपोर्ट पर आजादी का 75 वा स्वतंत्र दिवस के उपलक्ष में एयरपोर्ट के अंदर 6 फुट बाई 4 फुट की काफी बड़ी रंगोली बनाई जिसके अंदर पूरा भारत की एकता का प्रदर्शन किया गया छात्रों के द्वारा आजादी का स्वतंत्रता दिवस को लेकर एक नाटक प्रस्तुति भी दी गई एवं एक डांस प्रोग्राम जिसको सूरत एयरपोर्ट पर आए हुए यात्रियों ने बहुत सराहा संस्था के डायरेक्टर अनुपम गोयल ने एयरपोर्ट अथॉरिटी को धन्यवाद दिया एवं एयरपोर्ट अथॉरिटी की निदेशक श्रीमती अमन सैनी ने छात्रों के कार्य की प्रशंसा की।

गुजरात में कांग्रेस के एक और विधायक के भाजपा जॉइन करने के संकेत

राजकोट ।

राजकोट के धोराजी में आयोजित सर्व रोग निदान कैम्प में भाजपा सांसद और विधायक के साथ कांग्रेस के एक विधायक को देख चर्चा है कि वह जल्द ही भगवा धारण कर सकते हैं। चर्चा तो यह है कि सौराष्ट्र से कांग्रेस के 6 विधायक हाथ का साथ छोड़ सकते हैं। भाजपा नेताओं के साथ मंच साझा करने वाले कांग्रेस विधायक ललित वसोया हैं। हांलाकि उन्होंने सीधे कांग्रेस छोड़ने की बात नहीं कही है, परंतु पति-पत्नी का उल्लेख कर एक संकेत जरूर दे दिया है। दरअसल राजकोट जिले के धोराजी में आयोजित सर्व रोग निदान कैम्प में भाजपा सांसद रमेश धड़ूक और विधायक जयेश रादडिया के साथ ही कांग्रेस विधायक ललित वसोया भी उपस्थित रहे। पत्रकारों के साथ बातचीत में रमेश वसोया ने भाजपा जॉइन करने के संकेत जरूर दिए, परंतु सीधे तौर पर कहने के बजाए उन्होंने पति-पत्नी के बीच तलाक का उदाहरण दिया। ललित वसोया ने कहा कि शादी के वक्त पति-पत्नी उम्रभर साथ रहने का वादा करते हैं, लेकिन किन्हीं वजह से दोनों के बीच तलाक भी हो जाता है। इसलिए आजीवन मैं कांग्रेस में रहूंगा ऐसा कहने के बजाए यह कहना बेहतर होगा कि 'फिलहाल मैं कांग्रेस में हूं यह बड़ी बात है।' गौरतलब है गुजरात में विधानसभा चुनाव का ऐलान भले ही नहीं हुआ, लेकिन उसे लेकर भाजपा, कांग्रेस और आप ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। आप ने उम्मीदवारों की पहली सूची भी जारी कर दी है।

भाजपा भी 150 सीटों के लक्ष्य के साथ मजबूती के साथ काम कर रही है। सबसे बुरी हालत कांग्रेस की है, जिसके एक के बाद एक नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। गुजरात कांग्रेस के कई विधायक और वरिष्ठ नेता पार्टी छोड़ भाजप में शामिल हो गए या आप जॉइन कर चुके हैं। आगामी 1। अगस्त को कांग्रेस विधायक नरेश रावल और पूर्व सांसद राजु परमार भी भाजपा का भगवा धारण कर लेंगे। हाल ही में दोनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से दिल्ली में मुलाकात भी कर चुके हैं। आज ललित वसोया ने भी भाजपा जॉइन करने का संकेत दिया है। ऐसे में कांग्रेस के लिए आगामी विधानसभा चुनाव जीतने से ज्यादा पार्टी को एकजुट रखना मुश्किल हो रहा है। अब तक गुजरात में भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला होता था, लेकिन आप के आने से आगामी विधानसभा चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबला होना तय है।

प्रवासी भारतियों ने हांगकांग में लहराया हर घर तिरंगा

सूरत। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हर घर तिरंगा पहल का समर्थन करते हुए, हांगकांग में प्रवासी भारतीयों ने आजादी का अमृतमहोत्सव के अवसर पर च्हर घर तिरंगाज् सामूहिक अभियान के साथ स्वतंत्रता दिवस की खुशी मनाई। सूरत गुजरात के रमेश मालदार, राजू शाह और सोनाली वोरा ने हांगकांग में अभियान का नेतृत्व किया।

इस अवसर अपने भारत प्रेम और प्रधानमंत्री के प्रति अपने समर्थन व सम्मान को दर्शाते हुए, ओएफबीजेपी हांगकांग और चीन ने गर्व के साथ "हर घर तिरंगा फॉर हांगकांग इंडियंस" के माध्यम से सहर घर तिरंगा में अपनी भागीदारी की घोषणा की। ओएफबीजेपी हांगकांग और चीन के अध्यक्ष सोहन गोयनका ने कहा कि, हमारा मकसद च्भारत को भारतीयों तक पहुंचानाज् है। हम हांगकांग में हर भारतीय तक तिरंगा वितरित कर रहे हैं। ओएफबीजेपी हांगकांग और चीन ने हर भारतीय के घरों और ऑफिस के लिए 6000 से अधिक तिरंगे वितरित किये है। हांगकांग में बसे सभी भारतियों ने खुशी-खुशी मातृभूमि की जय-जयकार कर आजादी का अमृतमहोत्सव मनाया।

उपाध्यक्ष, राजू सबनानी, रमाकांत अग्रवाल, अजय जकोटिया, राजू शाह, कुलदीप एस. बुट्टर, सोनाली वोरा अभियान के समर्थन में आए और इन सभी की कड़ी मेहनत और समर्पण के द्वारा हर घर तिरंगा अभियान हांगकांग में सफलतापूर्वक संभव हो पाया।

शशि भूषण, महासचिव, ओएफबीजेपी हांगकांग और चीन ने कहा कि हमें अपने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में हर घर तिरंगा पहल में भाग लेने पर बहुत गर्व है, जिन्होंने इस अभियान के साथ भारतियों को देश व विदेश में एकजुट कर दिया है। हजारों एनआरआई ने हर घर तिरंगे में भाग लिया और राष्ट्र प्रेम में अपने घर, कार्यालयों में झंडा फहराया।

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत अतुल बेकरी के द्वारा लाजपोर सेंट्रल जेल में 100 मीटर लंबा तिरंगा यात्रा निकाला गया

सूरत भूमि, सूरत शहर के लाजपोर स्थित सेंट्रल जेल में आजादी के अमृत महोत्सव के उत्सव के रूप में समग्र देश में हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत यहां की जेल के नायब पुलिस महानिरीक्षक श्री मनोज निनामा साहेब के मार्गदर्शन में अतुल बेकरी के लोगो ने कैदियों द्वारा बैंड के साथ 100 मीटर लंबा राष्ट्रीय ध्वज लिए हुए 500 से अधिक राष्ट्रध्वज के साथ जेल के अंदर ही तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया।

भारत सरकार, राज्य सरकार साथ ही अधिक पुलिस महानिर्देशक जेल और सुधारात्मक व श्री डॉ. के. एल. राव साहेब श्री के सूचना और राजकोट सेंट्रल जेल के नायक पुलिस महा निरीक्षक मनोज निनामा साहेब के मार्गदर्शन से कैदियों में तिरंगा के प्रति मान सम्मान बढे इसलिए कैदियों में राष्ट्रीय भावना बढ़ाने और देश के प्रति त्याग और बलिदान की भावना जागृत करने के लिए इस भगीरथ प्रयत्न के जैसे तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। तिरंगा यात्रा में अतुल बेकरी के चेयरमैन अतुल वेकरिया भी उपस्थित थे।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)